हिन्दी एवं भाषा विज्ञान

प्रथम सेमेस्टर

प्रश्नपत्र–01 'हिंदी साहित्य का इतिहास' प्रश्नपत्र में इतिहास लेखन की परंपरा, काल विभाजन, सीमा निर्धारण आदिकाल, मध्यकाल एवं रीतिकाल की प्रवृत्तियों व प्रमुख धाराओं सहित आधुनिक काल तक की संपूर्ण काव्य प्रवृत्तियों के साथ–साथ आधुनिक गद्य विधाओं के उद्‌भव व विकास का सर्वांगीण अध्ययन किया गया है।

प्रश्नपत्र–02 'प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य' के अंतर्गत चंद बरदाई : विद्यापति : कबीर ग्रंथावली : जायसी : पदमावत : सूरदास : भ्रमरगीत सार : तुलसीदास : रामचरित मानस का उत्तरकांड : घनानंद : बिहारी रत्नाकर : भूषण : शिवा बावनी का अध्ययन कराया गया है।

प्रश्नपत्र–03 'आधुनिक हिंदी काव्य' के अन्तर्गत मैथिलीशरण गुप्त : जयशंकर प्रसाद : सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला : सुमित्रानंदन पंत : रामधारी सिंह 'दिनकर' : नागार्जुन तथा भवानी प्रसाद मिश्रः का आंशिक अध्ययन कराया गया है।

प्रश्नपत्र–04 भाषा ध्वनि विज्ञान एवं रूप विज्ञान प्रश्नपत्र के अन्तर्गत भाषा का अर्थ विकास एवं इसके विविध पक्षों, भाषा व्यवस्था और व्यवहार, भाषा विज्ञान का अर्थ, परिभाषा, क्षेत्र एवं अध्ययन पद्धतियां, भाषा विज्ञान का अन्य से सम्बन्ध, संसार की भाषाओं का वर्गीकरण, ध्वनि का अर्थ एवं परिभाषा स्वन और स्वनिम का अर्थ, ध्वनि नियम, ध्वनि परिवर्तन, रूप परिभाषा, तात्विक विवेचन, विश्लेषण, रूप परिवर्तन के कारण और दिशाओं का अध्ययन किया गया।

प्रश्नपत्र–05 'काव्य शास्त्र' के अन्तर्गत, संस्कृत काव्यशास्त्र की परम्परा, काव्य लक्षण, काव्य हेतु, काव्य प्रयोजन, रस सिद्धांत, अलंकार सिद्धांत, रीति सिद्धांत, औचित्य सिद्धांत, वक्रोक्ति सिद्धांत, ध्वनि सिद्धांत, काव्य और सामान्य भाषा में अंतर, प्रक्रिया, चयन, प्रतीकात्मकता, विम्वात्मकता के साथ–साथ पाश्चात्य चिंतकों की साहित्यक अवधारणाओं एवं सिद्धांतों यथा प्लेटो, अरस्तू, लोंजाइनस, क्रौंचे, वर्डसवर्थ का अध्ययन किया गया।

द्वितीय सेमेस्टर

प्रश्नपत्र–01 आधुनिक गद्य साहित्य के अन्तर्गत आषाढ़ का एक दिन, गोदान, कवियों की उर्मिला विषयक उदासीनता, कविता क्या है, उत्तराखण्ड में संत मंत, अशोक के फूल, सौन्दर्य की वस्तुगत सत्ता और सामाजिक विकास, अस्ति की पुकार हिमालय, शतरंज के खिलाड़ी, नीली झील, वापसी, दोपहर का भोज, टूटन, दो दुखों का एक सुख का अध्ययन कराया गया।

प्रश्नपत्र–02 साहित्यालोचन के अन्तर्गत हिंदी आलोचना के उदय की परिस्थितियों, हिंदी आलोचना के विकास क्रम के साथ प्रमुख हिंदी आलोचकों की अवधारणाओं एवं पद्धतियों, हिंदी आलोचना की विविध प्रणालियों, संरचनावाद, विखंडनवाद, उत्तर आधुनिकता, डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी कृत कबीर और रामविलास शर्मा कृत भाषा और समाज का अध्ययन कराया गया।

प्रश्नपत्र–03 'अर्थ विज्ञान एवं वाक्य विज्ञान' के अन्तर्गत शब्द और अर्थ का संबंध, अर्थ परिवर्तन की दिशाएं पर्याय विज्ञान, शब्द शक्तियां, अर्थ तत्व, शब्द की परिभाषा एवं वगीकरण के अतिरिक्त वाक्य की परिभाषा, प्रकार, वाक्य संरचना आदि संबंधी विषयों पर अध्ययन कराया गया।

प्रश्नपत्र–04 'कोश विज्ञान एवं लिपि विज्ञान' में कोश : परिभाषा : भेद निर्माण प्रक्रिया प्रविष्टि संरचना : रूप–अर्थ संबंध कोश साहित्य का संक्षिप्त इतिहास तथा लिपि उत्पत्ति, विकास क्रम, भारतीय लिपियां, उपयोगिता, देवनागरी लिपि का विकास; गुण–दोष तथा लिपि और कंप्यूटर अनुप्रयोग आदि का अध्ययन किया गया।

प्रश्नपत्र–05 'हिन्दी का भाषिक स्वरूप' के अंतर्गत हिंदी की विकास यात्रा, विविध रूप, प्रयोजन मूलक हिंदी; प्रमुख व्यवहार क्षेत्र तथा भारतीय व्याकरण परंपरा; संस्कृत एवं हिंदी व्याकरण परंपरा में प्रमुखतः पाणिनी से यास्क तथा कामता प्रसाद गुरु से किशोरी दास वाजपेई आदि का अध्यापन किया गया।

तृतीय सेमेस्टर

प्रश्नपत्र–01 भाषा–प्रौद्योगिकी के अंतर्गत भाषा प्रौद्योगिकी की अवधारणा, तकनीकी पहलू, उद्‌भव, प्रकार एवं विवेचन, वर्तमान स्थिति एवं संभावना के साथ भाषा इंजीनियरिंग के स्वरूप संभावनवाएं और चुनौतियों के साथ कापर्स भाषा विज्ञान, संगणकीय भाषा विज्ञान, संस्कृत हिंदी छात्रों के लिए कंप्यूटर का व्याकरण एवं कंप्यूटर का उपयोग, 'पाठशाला, 'शिक्षा, इंटरनेट, वेब डिजाइन, ब्राउजर, मेल, टेलनेट का अध्यापन कराया गया है।

प्रश्नपत्र–02 राजभाषा हिंदी के अंतर्गत प्रशासन व्यवस्था और भाषा :, राजभाषा संबंधी संवैधानिक प्रावधान, टिप्पण, प्रारूपण, संक्षेपण, प्रतिवेदन, सरकारी बैठकों का आयोजन :, कार्यसूची एवं कार्य वृत्त के साथ–साथ हिंदी संकेताक्षर कूट पद निर्माण तथा प्रशासनिक शब्दावली का अध्यापन किया गया।

प्रश्नपत्र–03 भारतीय साहित्य के अन्तर्गत भारतीय साहित्य के स्वरूप, अध्ययन की समस्याएँ, आज के भारत का विंब, भारतीयता का समाजशास्त्र, हिंदी साहित्य में भारतीयता के मूल्य, गिरीश कर्नाड के हृयवदन, वीरेंद्र कुमार भट्टाचार्य के मृत्युंजय, बीच का रास्ता नहीं होता आदि का अध्यापन कराया जाता है।

प्रश्नपत्र–04 अनुवाद : सिद्धान्त और अनुप्रयोग–1 – ''के अन्तर्गत अनुवाद स्वरूप एवं अर्थ ; संरचनात्मक पहलू, व्यतिरेकी अध्ययन, अनुवाद विचारधाराएं परम्परा एवं अनुवाद प्रक्रिया :, पारिभाषिक शब्दावली, मुहावरे एवं लोकोक्तियाँ, पदनाम एवं संक्षिप्ताक्षर आदि का अध्ययन किया गया है।

प्रश्नपत्र–05 अनुवाद : एवं सिद्धान्त एवं अनुप्रयोग –2 – के अन्तर्गत अनुवाद के वैज्ञानिक, साहित्यिक मानविकी एवं समाज विज्ञान, तकनीकी अनुवाद, कार्यालयी अनुवाद के साथ–साथ अनुवाद के प्रकार, अनुवाद की समस्याएं :–, समाधान, अनुवाद पुनरीक्षण, अनुवाद सम्पादन, मूल्यांकन एवं मशीनी अनुवाद आदि पर अध्ययन किया गया।

चतुर्थ सेमेस्टर

प्रश्नपत्र–01 संचार भाषा एवं सृजनात्मक लेखन – के अन्तर्गत हिन्दी संचार माध्यमों, अर्न्तसंबंध संचार प्रक्रिया, संचार क्रान्ति के अतिरिक्त रिपोर्ताज, फीचर लेखन, साक्षात्कार, दृश्य सामग्री से संबंधित लेखन, स्तम्भ लेखन, विविध प्रकार की पत्रकारिता आदि विषयों का अध्यापन किया गया है।

प्रश्नपत्र–02 नाटक और रंगमंच का स्वरूप नाट्योत्पत्ति सम्बन्धी विविध मत, नाट्य भेद, नाट्य विधान और हिन्दी नाटक और रंगमंच का संक्षिप्त इतिहास, विकास, रंगमंच, अन्धेर नगरी, अजात शत्रु, धर्म युग नाटक के विभिन्न पक्षों का अध्ययन कराया गया।

प्रश्नपत्र–03 हिन्दी साहित्य का इतिहास, हिन्द की प्रमुख विधाओं का विकास, हिन्दी गद्य की प्रमुख विधाओं का विकास, भारतीय काव्यशास्त्र और पाश्चात्य काव्यशास्त्र का अध्ययन प्रस्तुत प्रश्नपत्र में अध्ययन अपेक्षित है।

प्रश्नपत्र–04 शोध प्रविधि – के अन्तर्गत शोध अवधारणा, स्वरूप शोध और संरचना सिद्धान्त, शोध के प्रकार, शोध प्रविधि, साक्षात्कार, अनुसूची और प्रश्नावली, आधार सामग्री संसाधन, शोध प्रतिवेदन तथा हिन्दी शोध के नैतिक परिदृश्य आदि विषयों का अध्ययन किया गया है।

प्रश्नपत्र–05 लघु शोधप्रबंध – लघु शोध प्रबंध के अन्तर्गत क्रमशः वशिष्ठ कृत नेत्रदान कहानी संग्रह में ''मानवीय संवेदनाएं'', 'डॉ. श्याम सिंह शशि कृत ''एकला चलो रे'' की कविताओं में मूल्य बोध', घंमडीलाल अग्रवाल जी द्वारा सम्पादित एकांकी संग्रह ''देशप्रेम के एकांकी'' में 'राष्ट्रीय चेतना'', 'डॉ. शेरसिंह विष्ट कृत परजे हुए लोग में यथार्थ के आयाम'', अमिता दुबे कृत ''मुखमनी'' की कहानियों में नारीमन की संवेदनाएं', रेणु सैनी कृत ''बचपन का सफर'' में बाल मनोविज्ञान', डॉ. रमेश पोखरियाल निशंक कृत 'देश हम जलने न देंगे' की कविताओं में राष्ट्रीय चेतना' विषय पर सात लघु शोध सम्पन्न करावाये गए।

ज्योतिष विभाग

उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय ज्योतिष विभाग भारतीय प्राचीन ज्ञान–विज्ञान एवं संस्कृति के संरक्षण का कार्य ज्योतिष शास्त्र करता है। भारत के ही नहीं अपितु समस्त विश्व के ज्ञानाधार वेद है। वेद के प्रमुख छः अंग हैं। छः अंगों में प्रधान अंग ज्यातिष शास्त्र ''नेत्र'' का कार्य करता है अर्थात् यदि हम दूसरे शब्दों में यह कहें कि सम्पूर्ण ज्ञान–विज्ञान, आकाश, पाताल, खगोल–भूगोल से लेकर यहां तक कि जन–सामान्य के व्यक्तिगत अन्तर्मन एवं बहिर्मन का कार्य भी ज्योतिष शास्त्र के द्वारा ही संभव है। काल शास्त्र का विधान एवं भूत–भविष्य–वर्तमान की गतिविधियों की जानकारी सूक्ष्म से स्थूल पर्यन्त समस्त ज्ञान ज्योतिष शास्त्र में समाहित है। उपर्युक्त समस्त विषयों का ज्ञान उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय अपने परिसर में शास्त्री, आचार्य, पी.जी. डिप्लोमा ज्योतिष, पी.जी. डिप्लोमा वास्तुशास्त्र एवं शोधकार्य के द्वारा ज्ञान प्रदान करके छात्रों को देश के भिन्न–भिन्न भागों में संस्कृत–संस्कृति तथा ज्योतिष शास्त्र का प्रचार–प्रसार एवं संस्कार प्रदान करने का कार्य ज्योतिष विभाग कर रहा है।

विद्यावारिधि :–

विश्वविद्यालय गत पांच वर्षों से शोध कार्य करवा रहा है। जिसमें ज्योतिष विभाग के दो छात्रों को डिग्री प्राप्त हो चुकी है। जबकि अन्य दो छात्र शोधरत हैं, इसी क्रम में वर्तमान में एक छात्र 2017–18 में ज्योतिष विभाग में शोध कार्य हेतु उत्तीर्ण होकर छःमाह की कक्षाओं में शोध से सम्बन्धित विधियों प्रबिधियों, नियमों एवं उपनियमों का ज्ञान प्राप्त कर शोध परीक्षा उत्तीर्ण करके विधिवत् ढंग से शोध कार्य कर करेगा।

एम.फिल्. :–

प्रथमवार विश्वविद्यालय एम.फिल्. की कक्षायें बैठाने जा रहा है जिसकी सम्पूर्ण नियमावली विद्यावारिधि के आधार पर निर्धारित की गई है।

1. प्रमोद कुमार जोशी – शोध डिग्री प्राप्त
2. अतुल कुमार – शोध डिग्री प्राप्त
3. राधेश्याम बहुखण्डी – शोधरत
4. लखपति देवी – शोधरत
5. शुभम शर्मा – शोध परीक्षा उत्तीर्ण

शास्त्री

1. विभाग – ज्योतिष विभाग
2. कार्यक्रम – पाठ्यक्रम

शास्त्री प्रथम वर्ष (प्रथमसत्रम्)

प्रथमपत्रम् – जनमपत्र दीपण

द्वितीयपत्रम् – मुहूर्त्तचिन्तामणी (शुभाशुभनक्षत्रप्रकरणे)

द्वितीयसत्रम्

तृतीयपत्रम् – ताजिकनीलकण्ठीप्रथमतन्त्रम्

चतुर्थपत्रम् – मुहूर्त्तचिन्तामणि

तृतीयसत्रम्

पंचमपत्रम् – षट्पंचशिका

षष्ठपत्रम् – जातकालंकार (सम्पूर्ण)

सप्तमपत्रम् – बृहदवास्तुमाला (आदितः द्वारुस्थापनविचारपर्यन्ता)

चतुर्थसत्रम्

अष्टमपत्रम् – मुहूर्त्तचिन्तामणी (विवाहप्रकरणम्)

नवमपत्रम् – भुवनदीपक

दशमपत्रम् – बृहदवास्तुमाला (गृहप्रवेशप्रकरणतः समाप्तिपर्यन्ता)

पंचमसत्रम्

एकादशपत्रम् – जैमिनीसूत्रम् (सम्पूर्ण)

द्वादशपत्रम् – वृहज्जातकम् (आदितोऽरिष्टाध्यापर्यन्तम्)

षष्ठसत्रम्

त्रयोदशपत्रम् – शिल्पदीपणः

चतुर्दशपत्रम् – वृहज्जातकम् (आयुर्दायाध्यायतः नामसयोगाध्यायपर्यन्तम्)

शास्त्री

1. विभाग – ज्योतिष विभाग
2. कार्यक्रम – पाठ्यक्रम

प्रथमसत्रम्

प्रथमपत्रम्– प्रथम पत्र के माध्यम से विद्यार्थियों को पंचांग परिचय, पंचांग ज्ञान ग्रहस्पष्टिकरण, भावस्पष्टिकरण, विंशोतरीदशा, अन्तर्दशा का ज्ञान करवाया जाता है।

द्वितीयपत्रम् – इस पत्र के माध्यम से तिथि, वार, नक्षत्र, योग, वारोका क्रय सर्वाथसिद्धि आदि योग अशुभ मुहूर्त, अशुभ वार, अशुभ योग, भद्रा तथा विभिन्न मुहूर्त आदि के विषय में ज्ञान करवाया जाता है।

द्वितीयसत्रम्

तृतीयपत्रम्– इस विषय के माध्यम से द्वादशराशि स्वरूप, मित्रमित्र विभाग, तिथि साधन, पंचवगीय बल, मुद्धदशा वर्षफल विवेचन का ज्ञान करवाया जाता है।

चतुर्थपत्रम्– इस पत्र के माध्यम से संक्रान्तियों के नाम, संक्रान्तिपुण्यकाल, ग्रहों के वेधसाधन, चन्द्र बल, दुष्टतिथिपारिहार, ताराओं के नाम आदि का ज्ञान करावाया जाता है।

तृतीयसत्रम्

पंचमपत्रम्– इस पत्र के माध्यम से द्वादशभाओं का शुभाशुभ ज्ञान, वृष्हिज्ञान, गमागम विचार नव ग्रहों का द्वादश भाओं के फलादेश का विचार किया जाता है।

षष्ठपत्रम्– इस पत्र के द्वारा तनुवादि द्वादश भाओं की संज्ञा, नैसर्गिकमैत्री, विषकन्या आदि का विचार, आयु का विचार तथा अशुभ योगों का विचार किया जाता है।

सप्तमपत्रम्– इस पत्र के द्वारा गृहनिर्माण, काकिणीविचार, भूमिशोधन, शिलान्यासविधि, दिक्साधन, पिण्डानयन, कूर्मचक्र तथा द्वारनिर्णय का ज्ञान करवाया जाता है।

चतुर्थसत्रम्

अष्टमपत्रम्– इस पत्र के माध्यम से विवाह फल लक्षण, प्रश्नलग्न के द्वारा विवाह योग, कन्यावरण मुहूर्त, अष्टकूट विचार, लग्नसुद्धि आदि का ज्ञान करवाया जाता है।

नवमपत्रम्– इस पत्र के माध्यम से इष्टकाल साधन, गर्भसम्बन्धी ज्ञान पथिकगमनागमन का विचार, लाभ–हानि आदि का ज्ञान करवाया जाता है।

दशमपत्रम्– इस पत्र के माध्यम से कालशुद्धि का ज्ञान, वृक्षारोपण का विचार, कूपनिर्माण, देवमन्दिर आदि का ज्ञान करवाया जाता है।

पंचमसत्रम्

एकादशपत्रम्– इस पत्र के द्वारा अर्गलाविचार, पद का ज्ञान, गुलिक का विचार चर दशा का ज्ञान, ग्रह केन्द्रादि दशा आदि का ज्ञान करवाया जाता है।

द्वादशपत्रम्– ग्रन्थनिर्माण का प्रयोजन, राशियों का वर्ण बल विचार, सर्पवेष्टित जन्म ज्ञान, परजातयोग, अरिष्ट काल का ज्ञान करवाया जाता है।

षष्ठसत्रम्

त्रयोदशपत्रम्– द्वादश मासो का फलादेश, सौरमास का विचार, वास्तुपूजन, गृहारम्भ में पंचांग शुद्धि, शिलान्यास पद्धति का ज्ञान करवाया जाता है।

चर्तुदशपत्रम्– इस पत्र के माध्यम से चक्रपात हानि विचार, सतायुविचार अष्हकवर्ग का विचार, राजयोग का विचार, नाभसयोगो का ज्ञान करवाया जाता है।

पी.जी. डिप्लोमा वास्तुशास्त्र
प्रथमसत्रम्

प्रथमपत्रम्– इस पत्र के माध्यम से छात्रों को वास्तुशास्त्र का परिचय, वास्तुशास्त्र के मानक ग्रन्थों का परिचय व वास्तुशास्त्र की उपयोगिता का ज्ञान करवाया जाता है।

द्वितीयपत्रम्– इस पत्र के द्वारा छात्रों को पंचमहाभूतो का परिचय, पंचमहाभूतो की उपयोगिता, भूमि के दोष, और भूमि की गुणवत्ता का ज्ञान करवाया जाता है।

तृतीयपत्रम्– इस पत्र के माध्यम से भूखण्ड का चयन, भूमि का शोधन, भूमि का आकार–प्रकार और दिक् साधन का ज्ञान करवाया जाता है।

चतुर्थपत्रम्– इस पत्र के द्वारा छात्रों को पंचांग का परिचय, मुहूर्त का ज्ञान, लग्न स्पष्टिकरण और ग्रहों का ज्ञान करवाया जाता है।

पंचमपत्रम्– इस पत्र के माध्यम से गृहारम्भ मुहूर्त का विचार, गृहप्रवेश, राहुमुख–पुध का विचार, गृहारम्भ में भासो का ज्ञान करवाया जाता है।

पी.जी. डिप्लोमा वास्तुशास्त्र
द्वितीयसत्रम्

प्रथमपत्रम्– इस पत्र के द्वारा छात्र को काकिणी विचार, आयादि विचार, पिण्ड साधन, भूखण्ड की लम्बाई–चौड़ाई आदि का ज्ञान करवाया जाता है।

द्वितीयपत्रम्– इस पत्र के माध्यम से वास्तुशास्त्र का पद विन्यास, शिलान्यास विधि, जल विधान आदि का ज्ञान करवाया जाता है।

तृतीयपत्रम्– इस पत्र के द्वारा वास्तु के द्वारा पर्यावरण का ज्ञान, वास्तु के अनुसार शुभा–शुभ विचार, वास्तु के द्वारा दोष निवारण एवं शान्ति का ज्ञान करवाया जाता है।

चतुर्थपत्रम्– इस पत्र के माध्यम से औद्योगिक क्षेत्रों हेतु वास्तु का ज्ञान, शैक्षणिक संस्थाओं हेतु वास्तु ज्ञान, चिकित्सालयीय क्षेत्र हेतु वास्तु का ज्ञान छात्रों को करवाया जाता है।

पंचमपत्रम्– इस पत्र के माध्यम से छात्रों द्वारा लघुशोध करवाया जाता है तथा उपर्युक्त पाठ्यक्रम में से ही मौखिक परीक्षा का आयोजन करवाया जाता है।

पी.जी. डिप्लोमा ज्योतिष शास्त्र
प्रथमसत्रम्

प्रथमपत्रम्– इस पत्र के द्वारा छात्रों को ज्योतिष शास्त्र का परिचय, उपयोगिता, ज्योतिष एवं विज्ञान, ज्योतिष शास्त्र के इतिहास के विषय में जानकारी दी जाती है।

द्वितीयपत्रम्– इस पत्र के माध्यम से छात्रों को सौर परिवार के सामान्य परिचय, पंचांग परिचय, नक्षत्र और राशिचक्र, समय ज्ञान, मानक और स्थानीय, सूर्योदय, सूर्यास्त दिनमान इष्टकाल भयात भभोग का ज्ञान कराया जाता है।

तृतीयपत्रम्– इस पत्र के माध्यम से छात्रों को लग्नसाधन, स्पष्ट ग्रह साधन, ससन्धि द्वादश भाव साधन, चलित चक्र निर्माण, षड्वर्ग साधन का बोध कराया जाता है।

चतुर्थपत्रम्– इस पत्र के माध्यम से छात्रों को ग्रह स्वरूप, उच्च–नीच एवं मूलत्रिकोण राशि ज्ञान, दृष्टि विचार, ग्रह मैत्री विचार, राशियों के गुण धर्म, स्वामी एवं चर स्थिर कारक ग्रहों का ज्ञान करवाया जाता है।

पंचमपत्रम्– इस पत्र के माध्यम से छात्रों को भाव विचार, भाव संज्ञा, लघुपाराशरी के अनुसार भावन विचार, आयु विचार, राजयोग विचार, नीचभंग राजयोग विचार ग्रहों के कारकतत्व का ज्ञान करवाया जाता है।

पी.जी. डिप्लोमा ज्योतिष शास्त्र
द्वितीयसत्रम्

प्रथमपत्रम्– इस पत्र के द्वारा छात्रों को कालपुरुष के अंग विचार ग्रहों के आत्मादि योग विचार बालादिष्ट योग विचार, प्रमुख रोगविचार, पंचममहापुरुष योग विचारों का ज्ञान करवाया जाता है।

द्वितीयपत्रम्– इस पत्र के माध्यम से छात्रों को द्वादशभाव फल तथा गोचर विचार का ज्ञान करवाया जाता है।

तृतीयपत्रम्– इस पत्र के माध्यम से छात्रों को विभिन्न (विंशोत्तरी/अष्टोत्तरी) दशाओं वर्ष लग्न साधन, ताजिक दृष्टि, पंचाधिकारी एवं वर्षेश निर्णय, त्रिपातकी चक्र मुद्दा दशा साधन का ज्ञान करवाया जाता है।

चतुर्थपत्रम्– इस पत्र के माध्यम से छात्रों को विवाह मेलापक, अष्टकूट विचार तथा मुहूर्त विचार का ज्ञान करवाया जाता है।

पंचमपत्रम्– उपर्युक्त पाठ्यक्रम में से ही छात्रों की प्रायोगिक तथा मौखिक परीक्षा करवायी जाती है।

आचार्य फलित ज्योतिष
प्रथमसत्रम्

प्रथमपत्रम्– इस पत्र के द्वारा छात्रों को भारतीय कुण्डली विज्ञान में वर्णित कुण्डली निर्माण, ग्रहस्पष्टादि साधनों का ज्ञान करवाया जाता है।

द्वितीयपत्रम्– इस पत्र के द्वारा छात्रों को फलदीपिका ग्रन्थानुसार फलादेश करने सम्बन्धी ज्ञान करवाया जाता है।

तृतीयपत्रम्– इस पत्र के द्वारा छात्रों को बृहत्संहिता ग्रन्थानुसार संहिता शास्त्र सम्बन्धित विषयों का ज्ञान करवाया जाता है।

चतुर्थपत्रम्– इस पत्र के द्वारा छात्रों को बृहद्वास्तुमाला ग्रन्थानुसार वास्तुविद्या का ज्ञान करवाया जाता है।

पंचमपत्रम्– इस पत्र के द्वारा छात्रों को पूर्वकालामृतम् ग्रन्थानुसार फलादेश करने सम्बन्धित ज्ञान करवाया जाता है।

आचार्य फलित ज्योतिष
द्वितीयसत्रम्

प्रथमपत्रम्– इस पत्र के द्वारा छात्रों को लघू पारशरी ग्रन्थद्वारा फलादेश विचार तथा गोल परिभाषा ग्रन्थ द्वारा खगोल सम्बन्धी ज्ञान करवाया जाता है।

द्वितीयपत्रम्– इस पत्र के द्वारा छात्रों को फलदीपिका ग्रन्थानुसार फलादेश से सम्बन्धित ज्ञान करवाया जाता है।

तृतीयपत्रम्– इस पत्र के द्वारा छात्रों को बृहत्संहिता ग्रन्थानुसार संहिता शास्त्र सम्बन्धी विषयों का ज्ञान करवाया जाता है।

चतुर्थपत्रम्– इस पत्र के द्वारा छात्रों को पंचस्वराः ग्रन्थद्वारा स्वरशास्त्र सम्बन्धी विषय का ज्ञान करवाया जाता है।

पंचमपत्रम्– इस पत्र के द्वारा छात्रों को उत्तरकालामृतम् ग्रन्थानुसार फलादेश सम्बन्धी विषयों का विचार किया जाता है।

आचार्य फलित ज्योतिष
तृतीयसत्रम्

प्रथमपत्रम्– इस पत्र के माध्यम से छात्रों को सूर्यसिद्धान्त ग्रन्थानुसार सिद्धान्त ज्योतिष सम्बन्धी विषयों का विचार किया जाता है।

द्वितीयपत्रम्– इस पत्र के माध्यम से छात्रों को जातक परिजात ग्रन्थानुसार फलादेश सम्बन्धी विषयों का विचार किया जाता है।

तृतीयपत्रम्– इस पत्र के द्वारा छात्रों को बृहत्संहिता ग्रन्थानुसार संहिता सम्बन्धी विषयों का ज्ञान करवाया जाता है।

चतुर्थपत्रम्– इस पत्र के द्वारा छात्रों को सर्वाथ चिन्तामणि ग्रन्थानुसार फलादेश सम्बन्धी विषयों का ज्ञान करवाया जाता है।

पंचमपत्रम्– इस पत्र के द्वारा छात्रों को ज्योतिष शास्त्र के इतिहास तथा स्वरूप का ज्ञान करवाया जाता है।

आचार्य फलित ज्योतिष
चतुर्थसत्रम्

प्रथमपत्रम्– इस पत्र के माध्यम से छात्रों को सूर्यसिद्धान्त ग्रन्थानुसार सूर्च/चन्द्र ग्रहणादि सिद्धान्त विषयों का ज्ञान करवाया जाता है।

द्वितीयपत्रम्– इस पत्र के द्वारा से छात्रों को जातक परिजात ग्रन्थानुसार फलादेश तथा विभिन्न योगों का ज्ञान करवाया जाता है।

तृतीयपत्रम्– इस पत्र के द्वारा छात्रों को बृहत्संहिता ग्रन्थानुसार संहिता स्कन्ध संबंधी विषयों का ज्ञान करवाया जाता है।

चतुर्थपत्रम्– इस पत्र के द्वारा छात्रों को शोध प्रविधि तथा लघुशोध निर्माण संबंधी विषयों का ज्ञान करवाया जाता है।

पंचमपत्रम्– उपरोक्त पाठ्यक्रम में से छात्रों की प्रायोगिक तथा मौखिक परीक्षा करवायी जाती है।

कोर्स का नाम – शास्त्री (बी.ए.)

सेमेस्टर – द्वितीय

प्रश्नपत्र – पर्यावरणीय अध्ययन (ए.ई.सी.सी.)

उक्त पाठ्यक्रम पर्यावरण से जुड़े विभिन्न मुद्दों पर प्रकाश डालता है। विद्यार्थी को इस प्रश्नपत्र के अध्ययन से प्राकृतिक संसाधनों, पर्यावरणीय प्रदूषण, जैव–विविधता, पर्यावरणीय अधिनियम जैसे ज्वलंत मुद्दों का समुचित ज्ञान मिलता है तथा पर्यावरणीय संरक्षण के प्रति वह जागृत होता है।

कोर्स का नाम – षाण्मासिक पाठ्यक्रम–पर्यावरणीय चेतना

उक्त पाठ्यक्रम में कुल चार प्रश्नपत्र हैं, जो विद्यार्थी में पर्यावरणीय चेतना जागृत करने के लिए उसे निम्न बिन्दुओं से अवगत कराते हैं :–

प्रथम प्रश्नपत्र – पर्यावरणीय अध्यन के मूल तत्व – पर्यावरणीय जागरूकता, प्राकृतिक संसाधन, पारिस्थितिकी, पर्यावरणीय शिक्षा आदि।

द्वितीय प्रश्नपत्र – जैव विविधता एवं वन्य जीव विज्ञान – जैव विविधता, वन्य जीव निर्दयता, वन्य जीव संरक्षण, जाति–विलुप्तिकरण आदि।

तृतीय प्रश्नपत्र – पर्यावरणीय समस्याएं तथा अधिनियम – प्रदूषण, भू–मण्डलीय तापन, अम्लीय वर्षा, आपदा, पर्यावरणीय आन्दोलन आदि।

चतुर्थ प्रश्नपत्र – संस्कृत साहित्य में पर्यावरण चेतना : एक परिचय – वैदिक साहित्य में पर्यावरण चेतना, संस्कृत साहित्य में प्रदूषण व निवारण, कालिदास साहित्य में पर्यावरणीय चेतना आदि।

विभाग–दर्शन

आचार्य प्रथमखण्ड,

प्रथम सेमेस्टर

प्रथम प्रश्नपत्र : वैदिक एवं औपनिषद् दर्शन :–

1. इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से छात्र वेदोणनिषद् सम्बन्धी शब्दों की निरुक्ती वैदिक दर्शन की उत्पत्ति एवं यज्ञ की उपयोगिता, यज्ञ की वैज्ञानिकता, वेदों में सृष्टि रचना सम्बन्धी विचार, ब्रह्मनिरूपण, विभिन्न मतों के विश्लेषण आदि से परिचित होंगे।
2. इसके अध्ययन से छात्र वैदिक कालीन समाजिक व्यवस्था के सभी प्रकार के अंगों व उनके परस्पर सम्बन्धों से परिचित होंगे।
3. भारतीय दर्शन में वर्णित आत्मा, अनात्मा एवं आत्मा की विभिन्न अवस्थाओं व मोक्ष की अवधारणा का दार्शनिक पक्ष जानेंगे।
4. पृथ्वी, जल, तेज, वायु आकाश (पंचमहाभूत) श्रुति एवं उसकी महत्ता व उनका विशिष्ट वर्गीकरण एवं वास्यगत विधि, निषेध व अर्थवाद की अवधारणा से परिचित होंगे।

द्वितीय प्रश्नपत्र :

1. छात्र नीतिशास्त्र की अवधारणा से परिचित होंगे, स्वरूप, क्षेत्र परिभाषा, नीति की आवश्यकता व उसके विकास क्रम को समझेंगे।
2. भारतीय वाङ्मय में उपलब्ध प्रमुख नीतिशास्त्रों व उनमें उपलब्ध प्रमुख तत्वों, निष्कामकर्म स्वधर्म, लोकसंग्रह, योगक्षेम, ऋण ऋत व पुरुषार्थ चतुष्टय के विचार का अवबोध करेंगे।
3. धर्म की अवधारणा, लक्षण, कर्म सिद्धान्त, श्रेय, प्रेय एवं वर्णाश्रम व्यवस्था के दार्शनिक अवधारणा को जानेंगे।
4. छात्र योग दर्शन के तत्वों यम–नियम, जैनत्रिरत्न, पंचशील सिद्धान्त, महात्मागाँधी के नैतिक दर्शन को जानेंगे व उनका जीवन में पालन को प्रेरित होंगे।
5. इसके अन्तर्गत छात्र बौद्ध दर्शन के उपाय कौशल, ब्रह्मबिहार, इतिकर्तव्यता, भारतीय–दर्शन में शुभाशुभ का सिद्धान्त व बौद्धविरल आदि तत्वों का विस्तृत अध्ययन करेंगे।

तृतीय प्रश्नपत्र : पाश्चात्य नीतिशास्त्र :–

1. इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से छात्र पाश्चात्य नीतिशास्त्र के अवधारणा स्वरूप, क्षेत्र, धर्म से सम्बन्ध पर्यावरण व नीतिशास्त्र का सम्बन्ध आदि का विस्तृत अध्ययन करेंगे।
2. पाश्चात्य नीतिशास्त्र में उपलब्ध नैतिक प्रत्यय–शुभ, न्याय, उचित, नैतिक सद्गुण का तात्विक विवेचन का अवबौध करेंगे व तत्सम्बन्धी प्लेटो, अरस्तू, नीत्शे, मार्क्स के विचारों को जानेंगे।

3. छात्र इस इकाई में नैतिक मानदण्ड, मनोवैज्ञानिक सुखवाद, नैतिक सुखवाद, अन्तः प्रज्ञावाद की अवधारणा को समझने में दक्ष होंगे।
4. इस इकाई में छात्र पाश्चात्य नीतिशास्त्र में स्वतन्त्रता, अधिकार, कर्तव्य, नैतिक वाध्यता, अपराध व दण्ड सम्बन्धी सिद्धान्त व मानवाधिकार सम्बन्धी विचारों को जानेंगे।
5. इस इकाई में छात्र पाश्चात्य नीतिशास्त्र में व्याप्त ए.जे. एयर व स्टीवेन्सन के संवेगवाद व आर.एम. हेयर के परामर्शवाद के सिद्धान्त को जानेंगे।

चतुर्थ प्रश्नपत्र :– भारतीय ज्ञान मीमांसा :

1. छात्र इस पाठ्यक्रम से भारतीय दर्शन में स्थित ज्ञान की अवधारणा उसके विभिन्न तत्व–परिभाषा, स्वरूप, क्षेत्र, प्रमा एवं अप्रमा के सिद्धान्त से परिचित होंगे।
2. महर्षि गौतम के प्रथमसूत्र का अध्ययन कर प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान व शब्द इन चतुर्विध प्रमाणों को समझेंगे।
3. भारतीय दर्शन के प्रमुख–प्रमाण, मीमांसा व वेदान्त के सिद्धान्तों को जानेंगे।
4. भारतीय दर्शन के प्रामाण्यवाद का न्याय, सांख्य, मीमांसा व बौद्ध दर्शन की दृष्टि से विवेचन को समझेंगे।
5. भारतीय दर्शन के ख्यातिवाद को समझेंगे।

पञ्चम प्रश्नपत्र – इस प्रश्नपत्र के अन्तर्गत वैदिकवाङ्मय के इतिहास का ज्ञान कराया जाता है।

आचार्य–प्रथम खण्ड, द्वितीय सेमेस्टर

प्रथम प्रश्नपत्र – पाश्चात्य ज्ञान मीमांसा :

1. प्रथम प्रश्नपत्र के पाठ्यक्रम से छात्र पाश्चात्य बुद्धिवाद के सम्बन्ध में डेकार्ट, स्पिनोजा, व लाइबिनिज जैसे प्रतिष्ठित दार्शनिकों के मन्तव्यों को जानेंगे।
2. अनुभववाद के सम्बन्ध में लॉक, बर्कले व ह्यूम के दार्शनिक विचारों का परिचय, परिचय प्राप्त करेंगे।
3. कांट समाक्षावाद के विचारों को जानेंगे।
4. छात्र हेगले व ब्रेडले के प्रत्यवाद के सिद्धान्त से परिचित होंगे।
5. प्लेटो व अरस्तू के ग्रीक दर्शन को समझेंगे।

द्वितीय प्रश्न पत्रः– पाश्चात्य तत्वमीमांसा :

1. इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से छात्र पाश्चात्य दर्शन व उसका तत्वचिंतन, तत्वचिंतन की प्रमुख समस्यायें व दर्शन व विज्ञान का सम्बन्ध विषयक दार्शनिक तत्वों का ज्ञान प्राप्त करेंगे।
2. ''सत् का स्वरुप'' पाठ्यक्रम के अन्तर्गत द्वैतवाद, अनेकत्ववाद, प्रत्ययवाद व भौतिकवाद के मूलभूत सिद्धान्तों का अवगमन करेंगे।
3. मन व शरीर के सम्बन्ध को समस्या, अन्तःक्रियावाद, समानान्तरवाद, चिदणुवाद विषयक तात्विक विवेचन से परिचित होंगे व सिद्धान्त को जानेंगे।
4. पाश्चात्य तत्वमीमांसा में आभास एवं सत्, कारणता सिद्धान्त, सामान्य एवं विशेष की अवधारणा से व उनके मूल सिद्धान्त से परिचित होंगे।

तृतीय प्रश्नपत्र – भारतीय तत्वमीमांसा :

1. इस पाठ्यक्रम के माध्यम से छात्र चार्वाक दर्शन के जऽवाद 'यावद् जीवेत सुखं जीवेत' की अवधारणा से परिचित होंगे, तथा जैन दर्शन के स्माद्वाद, अनेकान्तवाद तथा बौद्ध दर्शन के चार आर्य सत्यों तथा प्रतीकत्मसमुत्याद के विषय में ज्ञान प्राप्त करेंगे।
2. न्याय तथा वैशेषिक के द्रव्यादि पदार्थों का ज्ञान प्राप्त करते (प्रमेय सिद्धि प्रमाणाद्) के विषय में तथा ईश्वर के अस्तित्व पर विचार रख सकते हैं।
3. सांख्य–भोग के विषय प्रकृति, पुरुष तथा दोनों का सम्बन्ध, स्वरूप तथा सत्कर्मवाद के विषय में छात्र जानेंगे तथा अष्टांगयोग तथा ईश्वर पर विचार रख पायेंगे।
4. मीमांसा विषय के अन्तर्गत छात्र कर्मकाण्ड पद्धति सम्बन्धी जिज्ञासा 'अथातो धर्म जिज्ञासा' ? आदि के होने पर विधियों के ज्ञान द्वारा जिज्ञासा का समाधान कर पाएगा अभ्मुदय– निःश्रेयस का ज्ञान प्राप्त कर तथा ब्रह्म, आत्मा, ईश्वर के विषय का ज्ञान प्राप्त कर पायेंगे।
5. छात्र उपरोक्त के अध्ययन के द्वारा मोक्ष, अपवर्ग कैवल्य के ज्ञान द्वारा निर्वाण, ज्ञान और कर्म के विषय में अपनी समझ विकसित कर पायेंगे।
6. ए.जे. एयर का तार्किक भाववाद, अर्थ का सत्यापन सिद्धान्त तत्त्वमीमांसा का खण्डन के विषय में ज्ञान प्राप्त होगा।
7. गिल्बर्ड राइल का–मनस विचार, कोटिदोष, देकार्ल के द्वैतवाद का खण्डन के विषय से अवगत होंगे उनके विषय में ज्ञान प्राप्त होगा।

चतुर्थ प्रश्नपत्र – वेदान्त दर्शन :

1. प्रस्तुत पाठ्यक्रम के द्वारा छात्र षड् दर्शनों के अन्तर्गत वेदान्त दर्शन जिसे उत्तर मीमांसा भी कहा जाता है के अन्तर्गत वेदान्त सूत्र 'ब्रह्म जिज्ञासा से सम्बन्धित 'अथातो ब्रह्मजिज्ञासा' का चिन्तन करते हुए माया के स्वरूप के विषय में, अविधा के स्वरूप के विषय में तथा अनिर्वचनीय ख्यादिवाद् के विषय में ज्ञान प्राप्त करेंगे।
2. प्रस्तुत इकाई के अन्तर्गत छात्र वेदान्त में प्रतिपादित तीनों प्रकार की सत्ता, ब्रह्मविवर्तवाद, सगुण एवं निर्गुण ब्रह्म का ज्ञान प्राप्त करेंगे।
3. चतुर्थ इकाई द्वारा ब्रह्म की स्थिति, परिणाम, सत्तानुप्पतियों का तथा पंचीकरण के विषय में ज्ञान प्राप्त करेंगे। तर्क एवं श्रुति, अपरोक्षानुभूति, भक्ति एवं प्रपत्ति के विषय में जानेंगे।

पंचम प्रश्नपत्र – सांख्य दर्शन :

प्रस्तुत पाठ्यक्रम के द्वारा छात्र प्रकृति एवं पुरुष के संसर्ग, पुरुष बहुत्व हेतु तर्क की विवेचना, सत्कार्य बाद की विषय प्रकृति को समझा पाएगें, सृष्टि की प्रक्रिया महन्तव्रनादि तत्वों पंचमहाभूतों तथा पंचतन्मात्राओं का ज्ञान प्राप्त करेंगे, दुखत्रय, अण्ट सिद्धियों, विवेकख्याति, बन्धन–मोक्ष (जीवन मुक्ति, विदेहु मुक्ति) के विषयों में ज्ञान प्राप्त करेंगे।

आचार्य–द्वितीय खण्ड, तृतीय सेमेस्टर

प्रथम प्रश्नपत्र – योगदर्शन :

1. इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से हमें योग के विषय में ज्ञान प्राप्त होगा। योग क्या है ? अष्टांग योग की परिभाषादि के विषय में हमें ज्ञान प्राप्त होगा इसके अध्ययन से।
2. इसके अध्ययन से चित्त, चित्त वृत्तियाँ, चित्त भूमि आदि के विषय से अवगत होंगे इनका ज्ञान हमें प्राप्त होगा।
3. समाधि क्या है ? उसके भेद क्या हैं आदि के विषय में हमें ज्ञान प्राप्त होगा इसके अध्ययन से।
4. योग की विभूतियां, अभ्यास एवं वैराग्य, पंचक्लेशादि के विषय का ज्ञान हमें प्राप्त होगा इसके अध्ययन से।
5. इसके अध्ययन से हमें ईश्वर प्रणिधान, ईश्वर के स्वरूप के विषय में जानेंगे, उसका अध्ययन कर ज्ञान प्राप्त करेंगे। कैवल्यादि के विषय का ज्ञान प्राप्त होगा।

द्वितीय प्रश्नपत्र – भारतीय भाषा दर्शन :

1. इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से हमें अर्थ के समस्या– अभिद्या, लक्षणा, व्यंजना के विषय में ज्ञान प्राप्त होगा।
2. इसके अध्ययन से संकेत ग्रह– व्यक्तिवाद, जातिवाद, आवृतिवादादि के विषय में समझेंगे और ज्ञान प्राप्त होगा।
3. इसके अध्ययन से हमें शब्दबोध, स्फोट–पतंजलि, भतृहरि के ग्रन्थों से हमें स्फोट के विषय में ज्ञान प्राप्त होगा।
4. इसके अध्ययन से हमें वाक्यार्थ का ज्ञान होगा। हमें आकांक्षा, योग्यतादि के विषय में जानेंगे। अर्थ के सिद्धान्तों को जानेंगे उनका ज्ञान प्राप्त होगा।
   इसके अध्ययन से हमको भावना (शाब्दी, आर्थी, शब्दोब्रह्म (भतृहरि) के विषय में ज्ञान प्राप्त होगा।

तृतीय प्रश्नपत्र – समकालीन पाश्चात्य दर्शन :

1. इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से हमें रसेल प्रत्ययवाद का खण्डन, सामान्य ज्ञान दर्शन, दर्शन एवं विश्लेषण के विषय में ज्ञान प्राप्त होगा।
2. विट्गेन्सटाइन के भाषा और सत्, तथ्य और वस्तु, चित्र सिद्धान्त आदि के विषय में हमें ज्ञान प्राप्त होगा।
3. हुर्सल की चेतना की विषयापेक्षा का सिद्धान्त के विषय में हमें ज्ञान प्राप्त होगा।
4. इसके अध्ययन से हमें साहित्य शास्त्र के विभिन्न सिद्धान्तों रस, वक्रोक्ति अलंकारादि छः (6) काव्य सिद्धान्तों के विषय से अवगत होंगे, उनके विषय में हतें ज्ञान प्राप्त होगा।
5. इसके अध्ययन से हमें मम्मर, विश्वनाथ, विद्याधरादि काव्यकारों के दृष्टिकोण का हमें ज्ञान प्राप्त होगा। उनके मतों के विषय में जान पायेंगे।

चतुर्थ प्रश्नपत्र – धर्मदर्शन–**I** :

1. इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से धर्म की परिभाषा, स्वरूप, उसका विज्ञान उनके दर्शन के विषय में ज्ञान प्राप्त होगा।
2. इसके अध्ययन से धार्मिक बहुलवाद–हिन्दू, इस्लाम, सिक्स, इसाई के विषय में हमें ज्ञान प्राप्त होगा।
3. इसके अध्ययन से ईश्वर विचार का–देववाद, पुरुषोत्तमवाद, ईश्ववादादि के विषय से अवगत होंगे उनका ज्ञान प्राप्त होगा।

4. इसके अध्ययन से ईश्वर के अस्तित्व के प्रमाण–तात्विक प्रमाण, सृष्टिमूलक, नैतिक प्रमाणादि के विषय में हमें ज्ञान प्राप्त होगा।
5. इसके अध्ययन से हमें अशुभ की समस्या, धर्मनिरपेक्षतावाद के विषय से अवगत होंगे तथा इसका ज्ञान छात्रों को प्राप्त होगा।

पंचम प्रश्नपत्र – धर्मदर्शन–**II** :

1. इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से आत्मा की अवधारणा, मोक्ष और मानव नियति, आत्मा की अमरता के प्रमाण के विषय में हमें ज्ञान प्राप्त होगा।
2. इसके अध्ययन से संकल्प स्वातन्त्र, कर्म, पुर्नजन्म, पुरुषार्थ चतुष्टय के विषय से अवगत होंगे और इनका ज्ञान प्राप्त होगा।
3. इसके अध्ययन से हमें रहस्यवाद, अवतारवाद के विषय में ज्ञान प्राप्त होगा और विषय को समझेंगे।
4. इसके अध्ययन से हतें धार्मिक चेतना के विषय में ज्ञान प्राप्त होगा।
5. इसके अध्ययन से हमें सार्वभौम धर्म की सम्भावना, सर्व धर्म समन्वय के विषय से अवगत होंगे, विषय को समझेंगे और इसका ज्ञान प्राप्त होगा।

आचार्य–द्वितीय खण्ड, चतुर्थ सेमेस्टर

प्रथम प्रश्नपत्र – समकालीन भारतीय दर्शन :

1. इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से हमें राधाकृष्णन का बुद्धि और प्रज्ञा, जीवन की आध्यात्मिक दृष्टि, स्वामी विवेकानन्द जी का व्यावहारिक वेदान्त के विषय में ज्ञान प्राप्त होगा।
2. इसके अध्ययन से गांधी जी का, सत्य, अहिंसादि, हैगोर जी का–मानव का स्वरूप, मानववादादि के विषय में हमें ज्ञान प्राप्त होगा।
3. इसके अध्ययन से श्री अरविन्द जी के – सच्चिदानन्द, समग्रयोगादि के विषय से अवगत होंगे उनका ज्ञान हमें प्राप्त होगा।
4. के.सी. भट्टाचार्य जी का दर्शन की अवधारणा, निरपेक्ष की अवधारणा। एम.एन.राय की–उग्र मानवतावाद के विषय में हमें ज्ञान प्राप्त होगा इनके सिद्धान्तों को जान पायेंगे।
5. बी.आर. अम्बेडकर जी की –सामाजिक इकाई, मो. इकबाल का मृत्यु के उपरान्त जीवन के विषय से अवगत होंगे उनके विषय में हमें ज्ञान प्राप्त होगा।

द्वितीय प्रश्नपत्र – सामाजिक एवं राजनीतिक दर्शन :

1. इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से हमें समाज दर्शन के स्वरूप, परिभाषा उसका क्षेत्रादि विषयों के बारे में ज्ञान प्राप्त होता है।
2. इसके अध्ययन से हमें समाज की उत्पत्ति, व्यक्ति, समाज एवं राज्यादि के विषय से अवगत होंगे। हमें समाज के विषय में ज्ञान प्राप्त होगा।
3. इसके अध्ययन से हमें सामाजिक संस्थाओं का ज्ञान प्राप्त होगा। जैसे– परिवार, परिवार और विवाद, परिवार की जीवन में क्या आवश्यकता है इसके विषय में हमें ज्ञान प्राप्त होगा।
4. इसके अध्ययन से हमको लोकतन्त्र (राजनीति) पूंजीवाद, समाजवादादि के विषय में हमें ज्ञान प्राप्त होगा।
5. इसके अध्ययन से हमको समाज में परिवर्तन, आधुनिकता, अधिकार उनके कर्त्तव्यों आदि के विषय में हमें रूचि पैदा होगी और हमको इनका ज्ञान प्राप्त होगा।

तृतीय प्रश्नपत्र – भारतीय सौन्दर्य शास्त्र :

1. इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से हमें साहित्य की कलाओं (काव्यों) का हमें ज्ञान प्राप्त होगा, जैसे– चित्रकला, संगीत कला, शिल्पकालादि के विषय से हम अवगत होंगे, हमें इनके विषय में ज्ञान प्राप्त होगा।
2. इसके अध्ययन हमें काव्यों के विषय में ज्ञान प्राप्त होगा, काव्य क्या है ? उसके हेतु क्या है ? आदि के विषय से अवगत होंगे। इसके विषय से हमें काव्य का ज्ञान प्राप्त होगा।
3. इसके अध्ययन से हमें काव्य के भेदों के बारे जानकारियां प्राप्त होंगी। इसके अध्ययन से दृश्यकाव्य, श्रव्यकाव्य का ज्ञान प्राप्त होगा।

चतुर्थ प्रश्नपत्र – अवैदिक दर्शन :

1. इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से चार्वाक दर्शन से हमें प्रत्यक्षादि प्रमाणों का खण्डन, ईश्वरात्मा एवं मोक्ष का निराकरण, आधिभौतिक सुखवारादि के विषय में हमें ज्ञान प्राप्त होगा, इन विषयों से परिचित होंगे।
2. इसके अध्ययन से जैन का आचार–विचार उनके व्यवहार का, उनके रत्नों का उनके कर्म, पदार्थादि का ज्ञान हमें प्राप्त होगा। इस पाठ्यक्रम से हम जैन के विषय में जान पायेंगे।
3. इसके अध्ययन से हमें जैनदर्शन का स्याद्वाद, अनेकान्तवाद, सप्त भंगीनय बन्धन तथा मोक्ष के विषय में जानेंगे उनके परिचित होंगे।
4. इसके अध्ययन से हमें बौद्ध दर्शन के आर्यसत्य, आष्टांगिक मार्ग, अनात्मवादादि के विषय में ज्ञान प्राप्त करेंगे।
5. इसके अध्ययन से हमें प्रतीत्यसमुत्याद, क्षणभंगवाद, बौद्ध के सम्प्रदायः दीनयान, महायान, निर्वाणादि के विषय से हम अवगत होंगे, इनके विषयय में हमें ज्ञान प्राप्त होगा।

पंचम् प्रश्नपत्र – वाक् परीक्षा

1. विभाग का नाम – व्याकरण
2. संचालित पाठ्यक्रम – शास्त्री / आचार्य / पीएच.डी. / एम.फिल्.
   (सत्र 2017–18 से प्रस्तावित)
3. स्तर – उपर्युक्त
4. पाठ्यक्रम के विषय में :–

विश्व का प्राचीनतम वाङ्मय एवं भारतीय संस्कृति का मूल आधार वेद है। जिसमें धार्मिक तत्त्व के साथ–साथ वैज्ञानिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक, ऐतिहासिक एवं पर्यावरणादि अनेक विषयों का निगूढ तत्त्व निहित है। उस वैदिक वाङ्मय को यथार्थरूप में समझने का सर्वोत्तम माध्यम व्याकरण ही है। न केवल वैदिक वाङ्मय अपितु लौकिक संस्कृत भाषा के ज्ञान के साथ अन्य भाषाओं के एवं भाषा विज्ञान के अधिगम में भी व्याकरण का अपूर्व योगदान है। हमारे विभाग में शास्त्री (बी.ए.) एवं आचार्य (एम.ए.) कक्षा में अपेक्षित अनिवार्य विषयों के साथ व्याकरण का अध्ययन–अध्यापन होता है। यहां से अध्ययन के बाद छात्र संस्कृत वाङ्मय को समझने में पूर्णतः समर्थ हो जाता है एवं सेवा तथा जीविका की दृष्टि से शिक्षा, प्रशासनिक, पत्रकारिता, सेना, अनुवादक, दूरदर्शन आकाशवाणी आदि क्षेत्रों में जा सकता है। उपर्युक्त विषयों में ही शोध कार्य भी किया जाता है।

5. शास्त्री :–

(क) प्रथम सेमेस्टर :–

1. प्रथम पत्र :– वैयाकरणसिद्धान्त कौमुदी (सन्ध्यन्त) इस पत्र के अध्ययन से व्याकरणोपयोगी संज्ञा एवं परिभाषाओं के साथ अच् सन्धि, प्रकृतिभाव, हल् सन्धि विसर्गसन्धि एवं स्वादिसन्धि का ज्ञान होता है।
2. द्वितीय पत्र :– वैयाकरणसिद्धान्त कौमुदी (स्त्रीप्रत्ययान्त) इस पत्र के अध्ययन से अजन्त पुंलिंग पद, अजन्तस्त्रीलिंग पद, अजन्त नपुंसक पद, हलन्तपुंलिंग पद, हलन्तस्त्रीलिंग पद, हलन्तनपुसक पद अव्यय एवं स्त्री प्रत्यय का ज्ञान होता है।

(ख) द्वितीय सेमेस्टर :–

3. तृतीय पत्र :– वैयाकरणसिद्धान्त कौमुदी (कारक + अव्ययीभाव) इस पत्र के अध्ययन से छः कारकों का, सात विभक्तियों के विधान का एवं केवल समास तथा अव्ययीभाव समास का ज्ञान होता है। व्याकरणोपयोगी संज्ञा एवं परिभाषाओं
4. चतुर्थ पत्र :– वैयाकरणसिद्धान्त कौमुदी (तत्पुरुषसमासात्समासाश्रय) इसके अध्ययन से तत्पुरुष समास, बहुव्रीहि समास, द्वन्द्व समास, एकशेष, समासान्तविधि एवं समासाश्रयविधि का ज्ञान होता है।

(ग) तृतीय सेमेस्टर :–

5. पंचम पत्र :– वैयाकरणसिद्धान्त कौमुदी (अपत्याधिकार से द्विरुल प्रकरण तक) इसके अध्ययन से अपत्याधिकारीय, चातुरर्थिक, शैषिक, मतुबर्थीय, स्वार्थिक आदि समस्त तद्धित प्रत्ययों का ज्ञान होता है।

6. षष्ठ–पत्र :– प्रौढ़मनोरमा (आदि से स्वरूपसत्रपर्यन्त) इसके अध्ययन से संज्ञा, परिभाषा, अच् सन्धि हल सन्धि, विसर्ग सन्धि, प्रकरणस्थ समस्त सूत्रों का विशिष्ट ज्ञान होता है। साथ ही अजन्त पुँल्लिंग के अर्थवत्, कृततद्धित एवं सरूप सूत्रों का विशिष्ट ज्ञान होता है।

7. सप्तम पत्र :– महाभाष्य (1 से 4 आह्निक) इसके अध्ययन से शब्द लक्षण, व्याकरण प्रयोजन, शब्दार्थ सम्बन्ध, व्याकरण पदार्थ प्रत्याहार सूत्रार्थ एवं वृद्धिरादेच् आदि सूत्रों का महाभाष्य दृष्टि का ज्ञान होता है।

शास्त्री–तृतीय वर्ष

1. प्रथम प्रश्नपत्र :– वैयाकरणसिद्धान्त कौमुदी एवं प्रौढ़मनोरमा (स्त्री एवं कारक प्रकरण) इसके अध्ययन से उक्त प्रकरण स्थित सूत्रों का विशिष्ट परिज्ञान होता है।

2. द्वितीय प्रश्नपत्र :– परमलघुमंजूषा : इसके अध्ययन से व्याकरण, न्याय, मीमांसादि के अनुसार पद पदार्थ–विषयक समस्त दार्शनिक पक्षों का ज्ञान होता है।

3. महाभाष्य (7,8,9 आह्निक)
   इसके अध्ययन से महाभाष्य की दृष्टि पाणिनीय तत् तत् सूत्रों का विशिष्ट ज्ञान होता है।

4. चतुर्थ पत्र– परिभाषेन्दुशेखर
   इसके अध्ययन से शब्दव्युत्पति से सम्बन्धित समस्त परिभाषाओं (नियमों) का ज्ञान परिलक्षित होता है।

5. पंचम पत्र – प्रौढ़मनोरमा (शब्दरत्न टीका) इसके अध्ययन से स्त्री प्रत्यय एवं कारक से सम्बन्धित समस्त वैयाकरणक सिद्धान्तों का ज्ञान हो जाता है।

6. षष्ठ पत्र – न्यायसिद्धान्तमुक्तावली (अनुमानखण्ड) इसके अध्ययन से तार्किक क्षमता के अपूर्व विकास के साथ अनुमान प्रमाण के विषय में विशेष ज्ञान होता है।

7. सप्तम पत्र – हिन्दी

8. अष्टम पत्र – इतिहास

9. नवम पत्र – अतिरिक्त विषय अंग्रेजी

आचार्य प्रथम वर्ष (प्रथम सेमेस्टर)

प्रथम पत्र – लघुशब्देन्दुशेखर :

इसके अध्ययन से संज्ञा एवं परिभाषा के विषय में नागेश भट्टानुसार संज्ञा एवं परिभाषा से सम्बन्धित सूत्रों का विशिष्ट ज्ञान होता है।

द्वितीय पत्र – वाक्यपदीय (ब्रह्मकाण्ड) :

इसके अध्ययन से शब्द क्या है ? ध्वनि क्या है ? स्फोट क्या है ? वाणियाँ कितनी प्रकार की हैं शब्द ब्रह्म का विवर्त यह संसार कैसे है, इत्यादि शब्द दर्शन से सम्बन्धित समस्त विषयों का ज्ञान होता है।

तृतीय पत्र – वैयाकरणभूषणसार (धात्वर्थ से सुबर्थ प्रकरण तक) :

इसके अध्ययन से वैयाकरण, नैयायिक एवं मीमांसकों की दृष्टि से धातु के अर्थ, तिङ् के अर्थ, शाब्दबोध–स्वरूप, लकारों के अर्थ एवं कारक तथा विभक्तियों के अर्थ का परिज्ञान होता है।

चतुर्थ पत्र – निरुक्त (प्रथम, द्वितीय अध्याय) :

इसके अध्ययन से निर्वचन के सिद्धान्त परिज्ञान के साथ विभिन्न शब्दों के निर्वचन का ज्ञान होता है।

पंचम पत्र – वैदिक वाङ्मय का इतिहास :

इसके अध्ययन से वैदिक साहित्य से सम्बन्धित इतिहास का ज्ञान होता है।

आचार्य प्रथम वर्ष (द्वितीय सेमेस्टर)

प्रथम पत्र – लघुशब्देन्दुशेखर –(अच् सन्धि से स्वादिसन्धि पर्यन्त) :

इस ग्रन्थ में नागेश भट्ट जी के अनुसार सन्धि विषयक नियम व उपनियम का विशिष्ट ज्ञान प्राप्त होता है।

द्वितीय पत्र – न्यायसिद्धान्तमुक्तावली (शब्दखण्ड) :

उक्त ग्रन्थ के अध्ययन से न्यायदर्शन के ''शब्द प्रमाण'' का विशिष्ट ज्ञान होता है।

तृतीय पत्र – वैयाकरणभूषणसार (नामार्थ से ग्रन्थपर्यन्त) :

उक्त ग्रन्थ के अध्ययन से प्रातिपादिकार्थों का समासार्थों का स्फोट आदि का ज्ञान होता है।

चतुर्थ पत्र – भाषा विज्ञान/भाषा स्वरूप भाषा उत्पत्ति विकास, भाषा परिवार ध्वनि, पद, अर्थ विज्ञान :

उक्त ग्रन्थ के अध्ययन से भाषा की उत्पत्ति, स्वरूप तथा विभिन्न भाषा परिवारों का ज्ञान होता है। तथा ध्वनि–पद–अर्थ–विज्ञान का विशिष्ट विवेचन किया जाता है।

पंचम पत्र – भारतीयसंस्कृति (स्वरूप वैशिष्टय) :

इसके अध्ययन से भारतीय संस्कृति के स्वरूप का तथा भारतीय संस्कृति में विद्यमान वर्णाश्रम–संस्कार–व्यवस्था व महायज्ञादि विषयों का विशिष्ट ज्ञान होता है।

आचार्य द्वितीय वर्ष (तृतीय सेमेस्टर)

प्रथम पत्र – लघुशब्देन्दुशेखर (अजन्तपुल्लिंगप्रकणम्) :

उक्त ग्रन्थ के अध्ययन से पाणिनीय सूत्रों का (नियमों, उपनियमों) का विशिष्ट ज्ञान होगा।

द्वितीय पत्र – लघुशब्देन्दुशेखर (अजन्तस्त्रीलिंग से अव्ययप्रकरण तक) :

उक्त ग्रन्थ के अध्ययन से छात्रों को प्रकरणगत पाणिनीय सूत्रों का नियम उपनियम व उदाहरण प्रत्युदाहरण सहित विशिष्ट ज्ञान होगा।

तृतीय पत्र – लघुमंजूषा (शक्ति–लक्षणाऽऽकांक्षा–योग्यतातात्पर्यासन्तिप्रकरणपर्यन्त) :

उक्त ग्रन्थ के अध्ययन से छात्रों को वाक्य में शक्ति, लक्षणा व्यंजना एवं आकांक्षा, योग्यता, तात्पर्य व असान्ति के स्वरूप का विशिष्ट ज्ञान होगा साथ ही प्रसंगानुसार उक्तविषयक मतमतान्तरों से भी परिचय होगा।

चतुर्थ पत्र – निरुक्तम् (तृतीय व चतुर्थ अध्याय) :

उक्त ग्रन्थ के अध्ययन से तृतीयचतुर्थ–अध्यायगत वैदिक शब्दों व मन्त्रार्थों के निर्वचन का ज्ञान होगा।

पंचम पत्र – शोधः प्रविधिः एवं स्वशास्त्रीयनिबन्धः।

उक्त पाठ्यक्रम के अध्ययन से छात्रों को विभिन्न शोध प्रविधियों का मनोवैज्ञानिक ज्ञान प्राप्त होगा एवं शास्त्रीय निबन्ध–लेखन–कौशल का विकास होगा।

आचार्य द्वितीय वर्ष (चतुर्थ सेमेस्टर)

प्रथम पत्र – लघुशब्देन्दुशेखर (स्त्रीप्रत्यय से कारक प्रकरण द्वितीय विभक्ति तक) :

उक्त ग्रन्थ के अध्ययन से स्त्री प्रत्ययों का एवं कारक के द्वितीय विभक्ति तक का विशिष्ट ज्ञान होगा।

द्वितीय पत्र – कारकप्रकरण तृतीय विभक्ति से अव्ययीभाव समास तक :

उक्त ग्रन्थ के अध्ययन से कारक के तृतीय विभक्ति से आगे सभी विभक्तियों का और समास में अव्ययीभाव समास तक विशेष ज्ञान प्राप्त होता है।

तृतीय पत्र – व्युत्पत्तिवाद प्रथम कारक प्रकरण (नीलो घट.....नचेविद्वेष इति दिक्) :

उक्त ग्रन्थ के अध्ययन से विभिन्न तार्किक दृष्टि से पद पदार्थादि के सम्बन्ध का विशेष ज्ञान होता है।

चतुर्थ पत्र – व्याकरणशास्त्र इतिहास अथवा लघुशोध प्रबन्ध :

उक्त पाठ्यक्रम के अध्ययन से व्याकरण के ऐतिहासिक क्रम प्राचीन वैयाकरणों का विभिन्न व्याकरण शास्त्रों को विशिष्ट ज्ञान होगा।

पंचम पत्र – वाक् परीक्षा।

विभाग–वेद

शुक्लयजुर्वेद

शास्त्री प्रथम वर्ष (प्रथमः सत्रार्द्धः)

प्रथम पत्र (**C-1**)– शुक्लयजुर्वेद माध्यन्दिन संहिता 1–2 अध्यायौ :

इस पत्र में निर्धारित पाठ्यक्रम के अध्ययन से मूल संहिता भाग का तथा स्वरों का ज्ञान होगा। भाष्य के अध्ययन से मंत्रों के रहस्य को जान सकेंगे।

द्वितीय पत्र (**C-2**)– निरुक्तम् प्रथमोध्यायः

इस पत्र में निर्धारित अंशों के अध्ययन से भाषा विज्ञान में प्रमुख स्थान रखने वाले निरुक्त शास्त्र क्या है, तथा उसकी परिभाषा एवं आख्याति पदों का ज्ञान होगा।

शास्त्री प्रथम वर्ष (द्वितीय–सत्रार्द्धः)

तृतीय पत्र (**C-3**)– शुक्लयजुर्वेदीयमाध्यन्दिन संहिता 3 अध्याय एवं महीधरभाष्य :

इस पत्र के अध्ययन से मूलपाठ का सस्वर ज्ञान बढ़ेगा तथा व्याख्या भाग से वैदिक श्रौतकर्म का भी ज्ञानवृद्धि होगा।

चतुर्थ पत्र (**C-4**)– निरुक्तम्–द्वितीयतृतीयाध्यायौ :

इस पत्र में निर्धारित पाठ्यांश से विद्यार्थियों को निरुक्त शास्त्र में नैघण्टुक काण्ड की विशेषता एवं पद–पदार्थों का ज्ञान होगा।

शास्त्री द्वितीय वर्ष (तृतीय–सत्रार्द्धः)

पंचम पत्र (**C-5**)– शुक्लयजुर्वेद संहिता– 4–5 अध्यायौ पारस्कर गृहसूत्र द्वितीय काण्ड :

इस पत्र में निर्धारित पाठ्यांश से छात्रों को सस्वर मंत्रों के ज्ञान के साथ–साथ मंत्रों के रहस्य के विषय में ज्ञान होगा।

षष्ठ पत्र (**C-6**)– निरुक्त सप्तमोऽध्यायः

इस पत्र के पाठ्यांश के अध्ययन से छात्रों को निरुक्त शास्त्र की विशेषता एवं नैगम काण्ड का भी ज्ञानार्जन हो सकेगा।

सप्तम पत्र (**C-7**)– पारस्करगृह्यसूत्रम् प्रथमकाण्डम् शतपथब्राह्मणम् प्रथमकाण्डस्य 1–4 ब्राह्मणानि :

इस पत्र के पाठ्यांश से छात्रों को संस्कारों की गुढ़ता के साथ–साथ वैदिक श्रौतयज्ञ की विशिष्टता का ज्ञान होगा।

शास्त्री द्वितीय वर्ष (चतुर्थ–सत्रार्द्धः)

अष्टम पत्र (**C-8**)– शुक्लयजुर्वेदीयमाध्यन्दिनसंहितायाः 6–7 अध्यायौ सस्वरौ भाष्यंच :

इस पत्र में निर्धारित पाठ्यांश से छात्रों को सस्वर वेदाभ्यास के साथ–साथ व्याख्यामाग से श्रौतयज्ञ में प्रयुक्त कर्म अग्नीषोमीयपशुप्रधान का ज्ञान तथा उपांशुग्रह का ज्ञान होगा।

नवम पत्र (**C-9**)– निरुक्तम्, कात्यायनशुल्बसूत्र 1–2 कण्डिका :

इस पत्र के अध्ययन से छात्रों को निरुक्तशास्त्र के द्वारा दैवतकाण्ड में देवता के स्वरूप एवं विशेषताएँ तथा शुल्बसूत्र से यज्ञों में वेदिका निर्माण की विधि का ज्ञानार्जन कर सकेंगे।

दशम पत्र (**C-10**)– पारस्करगृह्यसूत्र 2 काण्डम्, शतपथब्राह्मण प्रथम काण्डस्य द्वितीयाऽध्यायस्य 1–5 ब्राह्मणानि :

इस पत्र में निर्धारित पाठ्यांश से छात्रों को चूड़ाकरण संस्कार के साथ–साथ विभिन्न प्रकार के स्मार्त तथा श्रौतयज्ञ का ज्ञान हो सकेगा।

शास्त्री तृतीय वर्ष

प्रथम पत्र– वैदिकवाङ्मयस्येतिहासः

इस पत्र के अध्ययन से छात्र जान सकेंगे कि वेदों के काल, भाष्यकार, विभाजन, वर्णित विषयों को।

द्वितीय पत्र– निरुक्त–परिशिष्ट– 13–14 अध्यायौ :

इस पत्र के अध्ययन से छात्रों को भाषाशास्त्र के प्रमुख निरुक्त ग्रन्थ के अन्तिम भाग परिशिष्ट प्रकरण से परिचित हो सकेंगे।

तृतीय पत्र– शतपथब्राह्मण– (अग्निचयन) जटादि–अष्टविकृतिपाठों की विधि :

इस पत्र में निर्धारित पाठ्यांशों से छात्र अग्निचयन विधि एवं वेदों की विकृतिपाठ की विशिष्ट शैली का ज्ञान हो सकेगा।

चतुर्थ पत्र– शुक्लयजुर्वेदसंहिता– 11–14 अध्यायाः सस्वर तथा भाष्यम् पारस्करगृह्यसूत्रम् :

इस पत्र में निर्धारित पाठ्यांश से छात्रों को सस्वर पाठाभ्यास के साथ–साथ विभिन्न संस्कारविधियों का ज्ञान कर सकेंगे।

पंचम पत्र– निरुक्तम्– 7–8 अध्यायौ, पिंगलछन्दसूत्रम् :

इस पत्र के माध्यम से छात्रों को निरुक्तशास्त्र के प्रमुख विषय दैवतकाण्ड में देवताओं के निरूपण तथा छन्दशास्त्र द्वारा वैदिकछन्द प्रणाली का विशिष्ट ज्ञान हो सकेगा।

षष्ठ पत्र– शुक्लयजुर्वेदप्रातिशाख्यम्5–8 अध्यायाः, काल्यायनशुल्बसूत्रम् :

इस पत्र के अध्ययन से छात्रों को वैथ्दक व्याकरण के उच्चारण, संज्ञारिका ज्ञान तथा वेदिका निर्माण से सम्बन्धित ज्ञान कर सकेंगे।

आचार्य (प्रथम–सत्रार्द्धः)

प्रथम पत्र – शुक्लयजुर्वेद संहिता 15–16 अध्यायौ महीधरभाष्यम्, अर्थसंग्रहः अधिकारविधिपर्यन्तम् :

इस पत्र में निर्धारित पाठ्यांश के अध्ययन से सस्वरमंत्रों के साथ–साथ व्याख्या भाग से शतरुद्रियाख्यान का ज्ञान तथा मीमांसा शास्त्र का प्रारंभिक ज्ञान कर सकेंगे।

द्वितीय पत्र – ऋग्वेदभाष्यभूमिका :

इस पत्र के अध्ययन से छात्रों को वेदादि शास्त्रों को क्यों पढ़ना चाहिए तथा इन शास्त्रों के सहयोग हेतु कौन–कौन से शास्त्र पढ़ना चाहिए। सभी की परिभाषा तथा प्रयोजन का ज्ञान कर सकेंगे।

तृतीय पत्र – शतपथब्राह्मण प्रथम काण्डस्य 5–6 अध्यायौ :

इस पत्र के अध्ययन से वैदिक श्रौतविधि का ज्ञान हो सकेगा–यथा– दर्शपौर्णभासादि।

चतुर्थ पत्र – जैमिनीयन्यायमाला–प्रथमोऽध्याय :

इस पत्र में निर्धारित पाठ्यांश से महर्षिजैमिनी द्वारा मीमांसाशास्त्र का अधिकरण के रूप में वैदिक विधियों का ज्ञान हो सकेगा।

पंचम पत्र – वैदिकसाहित्येतिहासः

इस पत्र के माध्यम से छात्रों को वेद क्या हैं, वेदों का क्या महत्त्व है, वेदों का काल का निर्धारण, तथा वेदभाष्यकारों का विभिन्न मतों एवं विहंगम दृष्टियों का ज्ञान कर सकेंगे।

आचार्य (द्वितीय–सत्रार्द्धः)

प्रथम पत्र – शुक्लयजुर्वेदसंहिता (15–16 अध्यायौ) महीधर–दयानन्दभाष्यम्, अर्थसंग्रहः मीमांसाप्रकरणतः सम्पूर्णम्

इस पत्र के माध्यम से छात्र जान सकेंगे कि आचार्य महीधर तथा स्वामीदयानन्द जी के भाष्य करने की शैली, साथ ही अर्थ संग्रहः के माध्यम से मीमांसाशास्त्र के विभिन्न प्रकरणों को भी आत्मसात् कर पायेंगे।

द्वितीय पत्र – कात्यायनश्रौतसूत्रम्–प्रथमोऽध्यायः

इस पत्र के माध्यम से छात्रों को वैदिकश्रौतयागों में प्रथम दर्शपौर्णमसिष्टिः करने की विधि एवं सभी यज्ञों की प्रमुख प्रकृतिविधियों को जान सकेंगे।

तृतीय पत्र – शतपथब्राह्मण– 7–8 अध्यायौ :

इस पत्र के माध्यम से छात्र दर्शपौर्णमास के विभिन्न रहस्यों को समझ सकेंगे।

चतुर्थ पत्र – जैमिनीयन्यायमाला 2 अध्याय :

इस पत्र में निर्धारित पाठ्यांश से छात्र मीमांसाशास्त्र जो कि वेद की पुष्टता करता है को और अधिक समझ सकेंगे।

पंचम पत्र – वेदभाष्यकाराणां भाष्यवैशिष्ट्यम् :

इस पत्र के द्वारा छात्रों को यजुर्वेद के विभिन्न भाष्यकारों की शैली का ज्ञान तथा उनकी भाष्यलिखने की विशिष्टता का परिचय कर सकेंगे।

आचार्य (तृतीय–सत्रार्द्धः)

प्रथम पत्र – शुक्लयजुर्वेदसंहिता 19–21 अध्यायाः महीधरभाष्य तथा दयानन्दभाष्ययोः तुलनात्मकमध्ययनम् :

इस पत्र के माध्यम से संहिता के भाष्यों में छिपे रहस्यों को महीधर एवं स्वामी दयानन्द जी के तुलनात्मक दृष्टि से पढ़ सकेंगे।

द्वितीय पत्र – कात्यायनशुल्बसूत्रम्– द्वितीयोऽयायः, दृष्टिप्रयोग :

इस पत्र के माध्यम से वैदिक श्रौतविधि को समझकर, दृष्टियों का प्रयोग जान सकेंगे।

तृतीय पत्र – बृहद्देवता 1–2 अध्यायौ, बृहदारण्यकोपनिषद्1–3 अध्याया :

इस पत्र के माध्यम से देवताओं का श्रेणी विभाजन तथा उपनिषद् की गूढ़ता के समझ सकेंगे।

चतुर्थ पत्र – वेदभाष्यभूमिका :

इस पत्र के पाठ्यांश से तैत्तिरायादि संहिताओं के भाष्य रहस्यों को भूमिका के रूप में तथा वेदत्व को जान सकेंगे।

पंचम पत्र – वैदिकनिबन्ध :

इस पत्र के माध्यम से छात्र मौलिक रूप से वेद के विभिन्न विषयों पर अपनी लेखनी द्वारा लिखने की कला का विकास कर सकेंगे।

आचार्य (चतुर्थ–सत्रार्द्धः)

प्रथम पत्र – शुक्लयजुर्वेदसंहिता 15–16 अध्यायाः आचार्य महीधर–दयानन्दभाष्ययोः तुलनात्मकमध्ययनम् :

इस पत्र के माध्यम से छात्र वेद में सृष्टि विषयक पुरुषसूक्त तथा आचार्य महीधर एवं स्वामीदयानन्द जी की दृष्टि का ज्ञान कर सकेंगे।

द्वितीय पत्र – कात्यायनश्रौतसूत्र 3–4 अध्यायौ, अष्टविकृतिलक्षणोदाहरणंच :

इस पत्र में छात्र श्रौतयज्ञों को समझकर करने की विधियों को एवं विशिष्ट विकृति पाठों को उदाहरण के माध्यम से समझ सकेंगे।

तृतीय पत्र – बृहद्देवता 3–4 अध्यायौ, कठोपनिषद :

इस पत्र के पाठ्यांशों से छात्र देवताओं की श्रेणियों को तथा आत्मा संबंधी ज्ञान को उपनिषद् के द्वारा महत्त्वपूर्ण रूप से ज्ञात कर सकेंगे।

चतुर्थ पत्र – भाषा विज्ञान :

इस पत्र के द्वारा छात्र भाषा विज्ञान की विभिन्न कोटियों–श्रेणियों को समझ सकेंगे।

पंचम पत्र – प्रयोगात्मक सस्वरमन्त्रोच्चारणम् (मौखिक) :

इस महत्त्वपूर्ण पत्र के माध्यम से छात्रों को अब–तक विभिन्न कक्षाओं में सस्वर वेदाध्ययन जो किया है उसका परीक्षण एवं विभिन्न प्रयोगात्मक विधियों का परीक्षण होगा।

BE.d 1st semester

1- **Philosophical & Sociological perspective of Education** - Modification of behaviour in positive direction is the main aim of education. Thoughts are the base of action. Education philosophy is related with the modification of thoughts of pupil teachers who are the back-bone of society and a powerful tool for social change.

2- **Psychology of learning & Development** - An all-round development of personality that is mental, physical and spiritual development is possible only through the knowledge of educational psychology.

3- **Technology of Teaching Learning** - Technology plays an important role in educational process. With the use of teaching aids and different methods of teaching the process of learning becomes interesting and easy.

4- **School Management & Leadership** - Planning is essential for every activity school management is very helpful in proceeding of education process systematically.

5- **Sanskrit Teaching** - Our University is known as Sanskrit University and Sanskrit is second State language of Uttarakhand so one paper of Sanskrit teaching Methodology is compulsory in B.Ed programme of Uttarakhand Sanskrit University.

BE.d 2nd semester

1- **Assessment of Learning** - Assessment of learning is a continuous evaluation of learning process of learner through different psychological tools.

2- **Acronyms Education in India** - History of education from Vedic period till today gives a bright sight to our pupil teachers who are on the path of torch bearer of tomorrow.

3- **Action Research in Education** - Through the Action Research the current problems are solved easily. A problem faced by teachers, students, management administration or in any sphere of educational process, becomes the topic of Research.

4- **Teaching Methodology – Shastra Shikshan**- Jyotish, Sahitya, Vyakaran, Shikshan from Sanskrit and teaching of English Hindi and Social Studies train our pupil teachers to become a capable and bright teacher. They learn How to teach these particular subjects in interesting way.

BE.d 3rd semester

Teaching practices - Teaching practices in different schools of our society help our pupil teachers very much. They learn every activities of school as well as present their lesson plans related to teaching methology.

BE.d 4th semester

1- **Enviroment Education** - To develope awareness about are nature and environment. To enable the students to think about pollutions and precaution.

2- **Values Education & Professional Ethics** - Values are the quality of human being how can be values inculcated in the behaviour of an individual and how it becomes the base of professional success and development.

3- **Application of ICT** - The role of information and communication Technology is very important in educational process. It provides new knowledge and skill as well as saves money energy and time.

4- **Yoga, Health & Physical Education** - Yoga health and Physical Education is very essential for a teacher would be. It develops positive energy and increase mental power we know that main purpose of Education, is creation of Healthy mind in a healthy body.

5- Optional Paper

(1) **Guidance & Counselling**- Proppes Guidance and counselling show the students path of their progress and enable them to choose suitable field of their interested.

(2) **Human Right Education** - Human Right Education make the pupil teachers aware of human rights and duties. Right to Education is the main sight of a human being which helps in allround development.

Department Education M.A

M.A 1st semester

1- **Philosophical Foundation of Education** - Thoughts and Actions are correlated. To develope the positive thinking is the main aim of Educational philosophy.

2- **Socililgycal Foundation of Education-** Education is the main instrument of Social change we know- 'A chain is so strong as its weakest link.' So Education makes every link of the chain of our nation powerful and capable. (link-individual-chain-society or Nation)

3- **Psychologycal Foundation of Education-** Psychological Aspect of Education is at the dirst step of Education process. Education is known as teaching-learning process. This is a bipolar process where both poles-Teacher and Students are the instrument of psychology.

4- **Research Methodology in Education-** Research is the main source of innovation In Educational process where new problems are faced, New ideas of solution come soon and a Researcher Who is Research scholar solve this step by step and give a light for future work.

5- **Data Interpretation Methods is Education-** Research is a Vast concept. In sampling the scholar minimize the size of Data and field and check the- reliability, validity and utility of sampling methods.

M.A 2nd semester – Same as

BE.d 3rd semester

1- Contemporary Indian Education –vishwa guru India in Ancient era has become a powerful place of Technology today. Contemporary Education. realize the demand of period and provide such type of Education to fulfil that and make our country strong in that field.

2- Comperative Education & Curriculum Development - .Comparison makes one to know the progress clearly. Through comparative Education. We can know about the power of different countries in different fields and develop a suitable curriculum according our India situation and demand.

3- (1) Educational & Vocational Guidance Education gives the power of Vocation but students are often confused in selection of Vccupation the paper develops a clear vision and healthy attitudes in selection of job

(2) Educational Technology. Education Technology is not only the use of machinery but a Teaching methodology. It can be through Machines, mantel power, skills, tricks etc. It makes learning process easy and interesting.

4- (1) Educational Measurement & Evaluation – Educational progress in known through the paper. Continuous evaluation is accepted today.

(2) Teacher Education- B.Ed course is related with teacher Education. Preserves-In-service Trainings are prescribed for Teachers. Different types of training for different level teachers are in existence. The students can be able to know about pre-primary, primary , Secondary and Higher Education Teachers training programmes.

BE.d 4th semester- Same as-

5- Sanskrit samany Jankari- Sanskrit knowledge is essential for every teachers and students of Sanskrit University. Devvani Sanskrit is Second State language of Uttarakhand So this paper provides General knowledge of Sanskrit language to the student.

Course Contents of PGDCA, Certificate in Computer and Shastri 2nd Year

1. P. G. Diploma in Computer Application (One year Diploma Course)

Course Name	Paper Name	Contents
PGDCA – I Semester	Paper-I (Computer Fundamental)	From this paper students get the knowledge about computer fundamentals like input/output devices, working of computers, about the operating system, software, hardware and introduction about the network.
	Paper-II (PC Packages)	In this paper student gets the knowledge about Windows operating systems (WinXp/Win7/Win8/Win10), office packages like MS Word, Excel and Power Point.
	Paper-III (Desktop Publishing)	In this paper students get the knowledge about Page maker, Photoshop etc desktop publishing software.
	Paper-IV (Programming in C)	After going through this paper students will gets the knowledges about computer programing, logic buildings and how to writing the programs, how to work with software and how to design software. This language is the mother language for all other language.
	Paper- V	This is the practical paper of Programming in C. In this paper student's work with computer, implement their programs, run programs and check outputs of the programs.
	Paper-VI	This is the practical paper of DTP. In this paper students work with DTP software like Photoshop, page maker MS Office, Open Office etc. to design different types of documentations.
PGDCA – II Semester	Paper-VII (Database Management System)	In this paper students know about database, how to work with data, processing of data, rules, normalization of data, how to manage data in data base, tables, query and database servers etc.
	Paper-VIII (Internet and Web Page Designing)	This paper describes in details about the Internet, email, web servers, basic networking concepts, search engines and HTML programing which helps to design web pages and websites.
	Paper- IX (Programming in Java)	From this paper students know about the high level programing language. This paper helps to design and develop software. Here students also learn Object Oriented Programming concepts and uses of object oriented features with real life applications.

	Paper-X (Operating System)	After going through this paper, students will know about the Operating System (OS), functions of OS, Types of OS and working of OS. Here Window OS compared with Linux OS and also know about the installation of Windows and Linux OS.
	Paper- XI	This is Practical paper of Programming in Java. Here students design programs in Java and run programs. Through this practical student know about the design and implementation of software.
	Paper-XII (Project)	From first semester and on the bases if second semester papers students have to design a project. Through this paper students will know about the software development life cycle and actual use of computers, programming language and documentation of the project reports.

2. Certificate in Computer (Six Month Course)

Course Name	Paper Name	Contents
Certificate in Computer	Paper-I (Computer Fundamental)	From this paper students get the knowledge about computer fundamentals like input/output devices, working of computers, about the operating system, software, hardware and introduction about the network.
	Paper-II (PC Packages)	In this paper student gets the knowledge about Windows operating systems (WinXp/Win7/Win8/Win10), office packages like MS Word, Excel and Power Point.
	Paper-III (Desktop Publishing)	In this paper students get the knowledge about Page maker, Photoshop etc desktop publishing software.
	Paper-IV (Programming in C)	After going through this paper students will gets the knowledges about computer programing, logic buildings and how to writing the programs, how to work with software and how to design software. This language is the mother language for all other language.
	Paper- V	This is the practical paper of Programming in C. In this paper student's work with computer, implement their programs, run programs and check outputs of the programs.
	Paper-VI	This is the practical paper of DTP. In this paper students work with DTP software like Photoshop, page maker MS Office, Open Office etc. to design different types of documentations.

3. Shastri 2nd Year

Course Name	Paper Name	Contents
Shastri 2nd Year	Paper	Through this paper student get the knowledge about computer fundamentals like Input/Output devices, Storage devices, working of computer, Software's, DTP, multimedia, Internet technology and HTML.

Describe what student should be able to do at the end of the course

1. Name of Department ---------- Ancient Indian History, Culture and Archaeology
2. Name of Programme ---------- B.A, M.A
3. Level (U.G, P.G, M.Phil, Ph.D, Certificate Course, PG Diploma) - ---------- U.G, P.G
4. A Paragraph (100 words) about the outcome of the main course - ---
   The B.A AND M.A courses of this department teach the students about the glorious past of India. The Harappan civilization of India , dating about 5000 years from today was one of the greatest civilizations of the world. After learning about this the students learn about the growth of India with the Mauryan , Shunga , Kushan , Satvaana , Gupta, Harsh, Cholas, etc dynasties. The courses in our department instill the values of ancient Indian culture in the students. After doing these courses the students have a lot of scope to become historians , archaeologists, museologists, etc. The Archaeological Survey of India offers lot of job opportunities for them. Apart from this , the students can go for higher studies , do Ph.D, UGC-NET and become teachers.

5. Two-Three lines about each question paper taught in the above mention (point 03) Course –

Annual and Semester	Name of Question Paper	Two-Three Lines Description
B.A Semester 1&2	भारतीय इतिहास एवं संस्कृति (हड़प्पा संस्कृति से 1200 ई0 तक)	Study of India from the Harappan culture to the Rajput era
B.A Semester 3&4	मध्यकालीन एवं आधुनिक काल का इतिहास (1200 ई0से 1950 ई0तक)	Study of India from the Sultanate and Mughal times to the British empire in India and the Indian freedom struggle
B.A Semester 5&6	विष्व का इतिहास (15वीं सदी के मध्य से 1945 ई0 तक)	Study of India from 15th century A.D upto 1945 A.D and study of the revolutions and events related to them in England, France, Italy, Germany, China and Russia
M.A Semester 1	1. History-Theory, Concept and Ancient Indian Historiography	the study of the writing of ancient Indian history and of written Indian history
M.A Semester 1	2. Political History of India (from the earliest time to 184 B.C.)	Study of India from Proto history period to the Mauryan period
M.A Semester 1	3. Political History of India (from 185 B.C. to 650 A.D.)	Study of India from post Mauryan period to the post Gupta period
M.A Semester 1	4. Political History of North India (from 651 A.D. to 1200 A.D.)	Study of the Rajput period and Rajput dynasty
M.A Sem ester 1	5. Political History of South India (from mid 600 A.D. to 1200 A.D.)	Study of the Chalukya, Pallava, Rashtrakuta, Chola and Pandya dynasties

M.A Semester 2	Social History of Ancient India (from the earliest time to 1200 A.D.)	Study of caste system, social system, families, condition of women and education in ancient India
M.A Semester 2	Economic History of Ancient India (from the earliest time to 1200 A.D.)	Study of economic conditions including agriculture, trade, commerce, exchange of money, etc in ancient India
M.A Semester 2	Ancient Indian Political thought and Administration	Study of the administrative system and republics of ancient India
M.A Semester 2	Indian Culture and thought	Study of ancient , medieval and modern culture of India
M.A Semester 2	Cultural History of Uttarakhand	Study of society and culture of Uttarakhand
M.A Semester 3	Archaeology : Methods and Theories	Study of methods and theories of archaeology including ancient sites and excavations
M.A Semester 3	Indian Pre-history	Study of early, middle and later stone age
M.A Semester 3	Indian Proto-history and Early Historical period	Study of Harappan culture, Bronze age and Iron age
M.A Semester 3	Indian Architecture	Study of the architecture of Harappans , Pallavas , Cholas and Rashtrakutas
M.A Semester 3	Indian Art and Iconography	Study of painting and sculpture of prehistoric Sandhavas, Mauryans , Kushans and Gupta
M.A Semester 4	Ancient Indian Paleography and Epigraphy	Study of ancient Indian scripts and epigraphs including important epigraphs of Indian history
M.A Semester 4	Ancient Indian Numismatics	Study of birth and development of ancient Indian coins and currency
M.A Semester 4	Cultural relation between India and South-East Asia	Study of cultural relations between India and Burma,Vietnam, Cambodia, Thailand and Indoneisa
M.A Semester 4	Woman in (Indian Ancient History)/Dissertation	Study of women in Vedic, Sutras, Buddhist literatures, R amayana, Mahabharatha, Sanskrit literature
M.A Semester 4	(Viva-Voce)	Discussions with students regarding what they have understood of their course in 2 years

Department of Journalism

1.Name of Department: **Department of Journalism**

2.Name of Programme: **B.J**.

3.Level: **U.G**.

4. About outcome of the course:

The B.J. program offered by the Department of Journalism of the University is a one year program spread over two semesters. This program is the entry level program in the field of Journalism and Mass Communication. After completing this course students acquaint themselves with the knowledge of Mass Communications concepts and process, Reporting, Editing, Advertising, Public Relations, Press Law, Radio and Cinema. Besides, students undergo one month Print Media industrial training which helps them to understand the real time functional knowledge of Print Media and develop better comprehension of the media industry. It prepares students with knowledge and strategic perspective essential to the leadership in the Media world.

Semester	Name of Question Paper	Description
1st	History of Journalism and Mass Communication	1. Develops understanding of Indian Journalism among students. 2.It familiarizes students with growth of newspapers in the post-Independence era 3.Apprises the students about the Journalism of Uttarakhand
1st	Mass Communication: Concept and Behavior	1. It enhances the knowledge of students regarding the fundamentals of communication and its various forms. 2. Makes the understanding of communication process better through communication theories and model.
1st	Various Forms of Journalism	1. Make aware the students of different kinds of Journalise. 2. Develop the understanding and appreciation of students towards different specialized journalism
1st	Indian Constitution and Relevant Issues	1. Enabling the students to know fundamentals of Indian constitution. 2. Enables the students to understand and appreciate Indian Polity and develop insight towards current issues
1st	Print Media: Reporting and Editing	1. Develops an understanding among students about news and news reporting 2. Students learn editing and understand newspaper designing.

Semester	Name of Question Paper	Description
2nd	Press Law and Moral of Media	1. Enabling the students to be aware and understand the intricacies of different law related to media in India 2. Enables the students to understand and appreciate the freedom of speech and expression as well as the freedom of media in India
2nd	Advertising	1. Helps students the basics of Advertising. 2.Aquaint the students with different kind of Advertising
2nd	Public Relations	1. Helps students the basics of Public Relations. 2.Aquaints the students with Public Relations practices in different kind of organization

2nd	**Radio and Cinema**	**1.Enables the students to understand the basics of technology involved in radio broadcast .** **2. Familiarizes the students with the growth and nature of radio broadcasting in India.** **3. Develop the appreciation about Indian Cinema among students.**
2nd	**Project and Print Media Training**	**1. Provides the students an opportunity of getting industrial exposure in Print Media organization.** **2. Students get real time learning and prepared better to be absorbed in the industry. It helps them to bridge the gap between academia and Industry requirement.**

1.Name of Department: **Department of Journalism**

2.Name of Programme: **M.J**.

3.Level: **P.G**.

4. About outcome of the course:

The M.J. program offered by the Department of Journalism of University is a one year program spread over two semesters. This program is the advance level program in the field of Journalism and Mass Communication. After completing this course students acquaint themselves with the knowledge of Television Journalism, Media Research, Sanskrit Journalism, Computer Applications in Media, Development Journalism, Media Management, Cyber Law, International Communication and role of media in society. Besides, students undergo one month Electronic Media industrial training/Dissertation which helps them to understand the real time functional knowledge of Electronic Media/Research and develop better comprehension of the media industry/Media Research. It prepares students with knowledge and strategic perspective essential to the leadership in the Media and Mass Communication research world.

Semester	Name of Question Paper	Description
1st	**Television Journalism**	**1. Develops an understanding among students about Television Journalism** **2. Familiarizes the students with the basics of TV news reporting and different aspects of Television Journalism**
1st	**Media Research**	**1. Enables students understand the importance of research in Communication .** **2. Teaches the students intricacies of communication research and its applications.**
1st	**Sanskrit Journalism**	**1.Develops an understanding and appreciation among students about Sanskrit Journalism** **2. Familiarizes the students with Sanskrit language and the various modes of Sanskrit Journalism**
1st	**Media and Society**	**1. Enables the students to understand the Indian Society, Culture and its features.** **2. Enables the students to understand the role and impact of Mass Media on the society.**
1st	**Information Technique and Computer Applications**	**1. Acquaints the students with computer and its operations.** **2. Apprises students with IT applications in media.**

Semester	Name of Question Paper	Name of Question paper
2nd	International Communication	1. Apprises the students about world media scenario . 2 Makes them aware of the struggle for bridging information gaps in the world.
2nd	Development Journalism	1. Sensitizes the students of development particularly in Indian perspective. 2. Develops the understanding of Development Communication. 3. Make the students understand development journalism and its various dimension
2nd	Media Entrepreneurship and Management	1. Helps the students understands the functions and principles of media management. 2. Make them understand the structure, planning and operations of media organizations
2nd	Cyber Media and Cyber Law	1. Apprises students with the wide spectrum of Cyber Media and its applications. 2. Develops the understanding among them about the various law pertaining to cyber media.
2nd	Dissertation or Project and Electronic Media Training	1. Enables the students to get the real time understanding of the application of research in the field of communication and mass communication and develop their horizon towards Media Research Or 2. Provides the students an opportunity of getting industrial exposure in Electronic Media organization. 3. Students get real time learning and prepared better to be absorbed in the industry. It helps them to bridge the gap between academia and Industry requirement.

1.Name of Department: **Department of Journalism**

2.Name of Programme: **M.A.(Journalism)**

3.Level: **P.G**.

4. About outcome of the course:

The M.A.(Journalism) program offered by the Department of Journalism of the University is a two year program spread over four semesters. This program provides holistic knowledge of various fields of Journalism and Mass Communication and wide job opportunities in Media Industry. After completing this course students acquaint themselves with the knowledge and skills of Mass Communications concepts and process, Reporting, Editing, Advertising, Public Relations, Television Journalism, Sanskrit Journalism , Development Journalism, Media Management, Media Research, Radio and Cinema,. Besides, students undergo one month Print Media industrial training and one month Electronic Media industrial training/Dissertation which help them to understand the real time functional knowledge of media and Mass Communication research. Students get better comprehension of the media industry. It prepares students with knowledge and strategic perspective essential to the leadership in the Media world as well as increases their employability.

Semester	Name of Question Paper	Description
1st	History of Journalism and Mass Communication	1. Develops understanding of Indian Journalism among students. 2.It familiarizes students with growth of newspapers in the post-Independence era 3.Apprises the students about the Journalism of Uttarakhand
1st	Mass Communication: Concept and Behavior	1. It enhances the knowledge of students regarding the fundamentals of communication and its various forms. 2. Makes the understanding of communication process better through communication theories and model.
1st	Various Forms of Journalism	1. Make aware the students of different kinds of Journalise. 2. Develop the understanding and appreciation of students towards different specialized journalism
1st	Indian Constitution and Relevant Issues	1. Enabling the students to know fundamentals of Indian constitution. 2. Enables the students to understand and appreciate Indian Polity and develop insight towards current issues
1st	Print Media: Reporting and Editing	1. Develops an understanding among students about news and news reporting 2. Students learn editing and understand newspaper designing.

Semester	Name of Question Paper	Description
2nd	Press Law and Moral of Media	1. Enabling the students to be aware and understand the intricacies of different law related to media in India 2. Enables the students to understand and appreciate the freedom of speech and expression as well as the freedom of media in India
2nd	Advertising	1. Helps students the basics of Advertising. 2.Aquaint the students with different kind of Advertising
2nd	Public Relations	1. Helps students the basics of Public Relations. 2.Aquaints the students with Public Relations practices in different kind of organization
2nd	Radio and Cinema	1.Enables the students to understand the basics of technology involved in radio broadcast . 2. Familiarizes the students with the growth and nature of radio broadcasting in India. 3. Develop the appreciation about Indian Cinema among students.
2nd	Project and Print Media Training	1. Provides the students an opportunity of getting industrial exposure in Print Media organization. 2. Students get real time learning and prepared better to be absorbed in the industry. It helps them to bridge the gap between academia and Industry requirement.

Semester	Name of Question Paper	Description
3rd	Television Journalism	1. Develops an understanding among students about Television Journalism 2. Familiarizes the students with the basics of TV news reporting and different aspects of Television Journalism
3rd	Media Research	1. Enables students understand the importance of research in Communication . 2. Teaches the students intricacies of communication research and its applications.
3rd	Sanskrit Journalism	1.Develops an understanding and appreciation among students about Sanskrit Journalism 2. Familiarizes the students with Sanskrit language and the various modes of Sanskrit Journalism
3rd	Media and Society	1. Enables the students to understand the Indian Society, Culture and its features. 2. Enables the students to understand the role and impact of Mass Media on the society.
3rd	Information Technique and Computer Applications	1. Acquaints the students with computer and its operations. 2. Apprises students with IT applications in media.

Semester	Name of Question Paper	Description
4th	International Communication	1. Apprises the students about world media scenario . 2 Makes them aware of the struggle for bridging information gaps in the world.
4th	Development Journalism	1. Sensitizes the students of development particularly in Indian perspective. 2. Develops the understanding of Development Communication. 3. Make the students understand development journalism and its various dimension
4th	Media Entrepreneurship and Management	1. Helps the students understands the functions and principles of media management. 2. Make them understand the structure, planning and operations of media organizations
4th	Cyber Media and Cyber Law	1. Apprises students with the wide spectrum of Cyber Media and its applications. 2. Develops the understanding among them about the various law pertaining to cyber media.
4th	Dissertation or Project and Electronic Media Training	1. Enables the students to get the real time understanding of the application of research in the field of communication and mass communication and develop their horizon towards Media Research Or 2. Provides the students an opportunity of getting industrial exposure in Electronic Media organization. 3. Students get real time learning and prepared better to be absorbed in the industry. It helps them to bridge the gap between academia and Industry requirement.

M. Lib. and I. Sc.

1. Name of the Department**: Library and Information Science**
2. Name of the Programme: **Master of Library and Information Science**
3. Level (U.G., P.G., M. Phil, PhD, Certificate course, PG diploma)
   P.G.
4. A paragraph (100 words) about the outcome of the main course**: The main objective of M. Lib. and I. Sc. course make students competent to take up the information challenges of the coming years. The students will be prepared to take leadership position in both traditional types of information institutions e.g., academic libraries and most modern and futuristic types of information institutes e.g., as database managers of information specialists. The students will be to make themselves fit in varied types of information work such as HRD, information dissemination or in house editing and publishing information systems management, e-marketing community development, R and D in information field, teaching and training etc.**

5. Two-Three lines about each question paper taught in the above mentioned (Point 03) Course

Annual and Semester	Name of the Question Paper	Two-Three Lines Description
Semester 1	Paper I : Universe of knowledge	This paper is dealing with the Objectives of the study of universe of knowledge : Library Science, Attributes of knowledge, Growth of knowledge and the modes of formation of knowledge, and subjects, Various System of organization of knowledge, Religion, Philosophy and Science.
	Paper II : Information Technology	This paper is dealing with the Information technology : Genesis and development Its impact on Libraries, Telecommunication Satellite Telecommunication Telex, Genesis and development of. Computers, Basic knowledge of Hardware and Software, Input device Functioning of Computer and its Limitations, National and International Network : INDONET, NICNET, INFLIBNET, AGRIS MEDLARS, INIS.

	Paper III : Information System and Services	This paper is dealing with the National and International Systems, programmes and Agencies : VINITI, INSDOC, FID, UNESCO, DESIDOC, NASSDOC, UNISIST, NISSAT, ASLIB 2- Indexing-Co-ordinate indexing PRECIS,POPSI,SLIC, Citation Index Science Citation Index, Problems in compilation of Documentation Lists, Problems of seepage and scatter of documents and their solution, Thesaurus : Need and method of construction, Marketing of Information-Concept, Marketing Strategies, techniques and Products.
	Paper IV : Depth Classification Theory	This paper is dealing with the Development of Theory of Library Classification; Role of classification Research for Machine search., Canons for work in the Idea plane Verbal plane, National place. 5- Categories in classification, Classification scheme-Historical Development Types, Special/ General, Development of Notational Techniques National Techniques in CC and UDC-Comparative study.
	Paper V : Advanced cataloguing, AACRC2-MARC 21	This paper is dealing with the Detailed and comparative study of Classified Catalogue Code with additional rules for the Dictionary Catalogue Code and Anglo American Cataloguing Rules 'II' Particularly rules concerning corporate author headings, composite and multi- volumes books, periodical and serial publication, Cataloguing of Special material such as maps micro films, Phonographs, record , films. etc.

Semester 2	Paper I : Research Methodology and Basic Statistics	This paper is dealing with the definition, need, purpose, types and Characteristics of Research and its Importance, Definition and types of research design. Historical, experimental survey, observation, Case study Tools for data collection: Questionnaire, interview, schedule, Checklist, rating scales. Nature and scope of statistics, its limitation; Primary/secondary (Mean, Median , Mode) Tabular, graphic, bar diagram, pie chary etc; Bibliographic standards Report Writing. Origin, Bibliometric distribution laws (Zipf, Informetrics, Scientometrics).
	Paper II : Information Sources in natural Science	This paper is dealing with the Brief survey of the contributions made by the various Natural Scientists. Developments, Problems and research trends in major disciplines in the natural sciences. Physical and biological sciences. Role of different types of Primary documents in the growth and Development of natural sciences as disciplines. Evaluation of the following secondary sources of information.
	Paper III : Academic Libraries special Libraries	This paper is dealing with the Role of U.G.C. in development of University and College Libraries, Growth and Development of academic libraries in India, Libraries Government : Authority, library Committee and relation of librarian with the authority.
	Paper IV : Classification Practice	This paper is a practical paper and it is dealing with the Classification of Books monographs and articles by Colon Classification (6^{th} ed., reprint) and Universal Decimal Classification 3rd ab. Ed.

	Paper V : Dissertation and Viva-Voce	This paper is also a practical paper and it is dealing with a dissertation / project report made by the students according to their thrust area and there is a Vica-Voce is also conducted by the Department for checking the students knowledge regarding the chosen topic.
	Paper VI : Sanskrit Paper (Compulsory)	This paper is compulsory paper for all courses and it is dealing with the general knowledge of Sanskrit and it is covering the main topics: How to write (1-100) Numbers in Sanskrit, Verses, Essays and Translation.

योग विज्ञान विभाग

प्रथम सेमेस्टर (1st semester)

S. N.	Title of the paper	Description
1	योग के आधारभूत तत्व Fundamentals of Yoga	योग का अर्थ, परिभाषा, इतिहास, योग का स्वरूप, योग का महत्व, योगी का व्यक्तित्व एवं आधुनिक युग में योग की उपयोगिता आदि की जानकारी दी जाती हैं।
2	श्रीमद्भगवद्गीता Shrimad Bhagwatgeeta	श्रीमद्भगवद्गीता का परिचय, आधुनिक जीवन में गीता की उपादेयता, आत्मा की अमरता, निष्काम कर्मयोग, गीता के अनुसार योग के विभिन्न लक्षण आदि की जानकारी दी जाती हैं।
3	हठयोग के सिद्धान्त Principles of Hath Yoga	हठयोग की परिभाषा, अभ्यास हेतु उचित स्थान, ऋतु, काल, योगाभ्यास के लिए पथ्यापथ्य निर्देष, साधना में साधक व बाधक तत्व, हठसिद्धि का लक्षण, हठयोग की उपादेयता हठयोग प्रदीपिका में वर्णित आसनों की विधि व लाभ। प्राणायाम की परिभाषा, प्रकार, विधि व लाभ, प्राणायाम की उपयोगिता आदि की जानकारी दी जाती हैं।
4	शरीर रचना एवं क्रिया विज्ञान – 1 Human Anatomy & Physiology-1	इस प्रश्न पत्र के अन्तर्गत शरीर रचना एवं क्रिया विज्ञान के अध्ययन के साथ शरीर पर योग के प्रभाव जानकारी दी जाती हैं। ।
5	प्रयोगात्मक – 1 (आसन, प्राणायाम) Practical - 1	इस प्रश्न पत्र के अन्तर्गत विभिन्न प्रकार के षटकर्म, आसन प्राणायाम एव मुद्राओं का प्रायोगिक अभ्यास कराया जाता हैं।
6	प्रयोगात्मक – 2 (पाठ योजना, शिक्षण विधि) Practical - 2	इस के अर्न्तगत छात्रों को पाठ योजना तैयार कराने की विधि बताई जाती हैं जिसका उपयोग भविष्य में शिक्षक बनने में उपयोग कर सकते है।

द्वितीय सेमेस्टर (2nd Semester)

S. N.	Title of the paper	Description
1	पातंजल योग Patanjalyoga	पातंजल योग में वर्णित सूत्रों की ब्याख्या एवं उसका व्यावहारिक पक्ष समझाया जाता है।
2	भारतीय दर्शन एवं मानव चेतना Indian Philosophy & Human Consciousness	विभिन्न प्रकार के भारतीय दर्शनों का परिचय एवं मानव चेतना के स्वरूप की जानकारी दी जाती है।
3	सामान्य मनोविज्ञान General Psychology	इस प्रश्न पत्र के अन्तर्गत सामान्य मनोविज्ञान जानकारी दी जाती हैं।
4	शरीर रचना एवं क्रिया विज्ञान – 2 Human Anatomy & Physiology-2	इस प्रश्न पत्र के अन्तर्गत शरीर रचना एवं क्रिया विज्ञान के अध्ययन के साथ शरीर पर योग के प्रभाव जानकारी दी जाती हैं।
5	प्रयोगात्मक – 1 (आसन, प्राणायाम) Practical – 1	इस प्रश्न पत्र के अन्तर्गत विभिन्न प्रकार के षटकर्म, आसन प्राणायाम एव मुद्राओं का प्रायोगिक अभ्यास कराया जाता हैं।
6	प्रयोगात्मक – 2 (परिवीक्षा – 30 दिन) Practical - 2	ग्रीष्म कालीन अवकाश के दौरान विद्यार्थियों को किसी योग केन्द्र पर जाकर, वहाँ के शिक्षण/चिकित्सा पद्धतियों का अवलोकन व अभ्यास कर, संक्षिप्त रिपोर्ट प्रस्तुत करना होता हैं।

तृतीय सेमेस्टर (3rd Semester)

S. N.	Title of the paper	Description
1	योगिक ग्रंथों के मूलभूत तत्व Basics of Yoga Text	प्रमुख योग सम्बन्धित उपनिषदों एवं ग्रन्थ का संक्षिप्त परिचय कराया जाता है।
2	योग की व्यवहारिकता एवं शिक्षण विधियाँ Applications of Yoga & Teaching Methodology	योग के व्यवहारिक पक्ष यथा शिक्षा में योग, तनाव प्रबन्धन हेतु योग और व्यक्तित्व विकास आदि की जानकारी दी जाती है।
3	योग में अनुसंधान एवं सांख्यिकी Yogic Research & Statistics	योग विषय में शोध हेतु अनुसंधान एवं सांख्यिकी की भूमिका की जानकारी दी जाती है।
4	प्राकृतिक चिकित्सा के सिद्धान्त Principles of Naturopathy	प्राकृतिक चिकित्सा के विभिन्न तकनीक की सैद्धान्तिक जानकारी दी जाती हैं।
5	प्रयोगात्मक – 1 (आसन, प्राणायाम) Practical – 1	इस प्रश्न पत्र के अन्तर्गत विभिन्न प्रकार के षटकर्म, आसन प्राणायाम एव मुद्राओं का प्रायोगिक अभ्यास कराया जाता हैं।
6	प्रयोगात्मक – 2 (शोध समीक्षा) Practical - 2	पूर्व में हुए शोध की समीक्षा करना तथा प्राकृतिक चिकित्सा के प्रायोगिक पक्ष की जानकारी दी जाती है।

चतुर्थ सेमेस्टर (4th Semester)

S. N.	Title of the paper	Description
1	योग चिकित्सा Yoga Therapy	विभिन्न प्रकार के योग की तकनीकों के माध्यम से की जाने वाली चिकित्सा की सैद्धान्तिक जानकारी दी जाती है।
2	वैकल्पिक चिकित्सा Alternative Therapy	विभिन्न प्रकार के वैकल्पिक चिकित्सा की तकनीकों की सैद्धान्तिक जानकारी दी जाती है।
3	आहार, पोषण एवं यौगिक जीवन शैली Diet, Nutrition & Yogic Life Style	मानव जीवन में आहार, पोषण एवं यौगिक जीवन शैली की उपयोगिता पर प्रकाश डाला जाता है।
4	लघु–शोध / निबन्ध Dissertation / Essay	भविष्य में उच्च स्तर पर शोध एवं लेखन क्षमता के विकास हेतु।
5	प्रयोगात्मक – 1 (आसन, प्राणायाम) Practical – 1	इस प्रश्न पत्र के अन्तर्गत विभिन्न प्रकार के षटकर्म, आसन प्राणायाम एव मुद्राओं का प्रायोगिक अभ्यास कराया जाता हैं।
6	प्रयोगात्मक – 2 वैकल्पिक चिकित्सा Practical – 2 Alternative Therapies	विभिन्न प्रकार के वैकल्पिक चिकित्सा की तकनीकों की व्यवहारिक जानकारी दी जाती है।

1- Name of Department **Sahitya**

2- Name of Programme Shastri, Acharya

3- Lavel U.G,P.G,Certificate course

उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय के व्याकरण ज्योतिष आदि विभागों में एक साहित्य विभाग भी है,जिसमें संस्कृतसाहित्य का अध्ययन अध्यापन एवम् अनुसन्धान आदि कार्य किये जाते हैं । साहित्य एक लोकप्रिय विषय है । साहित्य शब्द के कथन से गद्य ,पद्य ,चम्पू एवं खण्ड काव्य आदि का बोध तो होता ही है साथ में भरतमुनि आदि द्वारा विरचित नाट्यशास्त्र आदि लक्षण ग्रन्थों का भी बोध होता है । जैसे भाषाज्ञान के लिए व्याकरण उपयोगी है उसी प्रकार भाषा में परिष्कार के लिए साहित्य शास्त्र भी अत्यन्त उपयोगी है।साहित्यशास्त्र को अलंकारशास्त्र, काव्यशास्त्र,क्रियाकल्प आदि अनेक नामों से जाना जाता है । इस शास्त्र के अध्ययन,अनुशीलन आदि से यश ,अर्थप्राप्ति,व्यवहारज्ञान,अमंगलनाश, परमानन्दप्राप्ति एवं कान्तासम्मित उपदेश आदि अनेक प्रयोजन सिद्ध होते हैं । विभाग में पढाये जा रहे पाठ्यक्रम से छात्र ज्ञानविज्ञान का समुद्र रूप समस्त संस्कृत साहित्य को समझने में पारंगत होकर प्राच्यविद्या का संरक्षण, प्रचार, प्रसार व अनुसन्धान करने में समर्थ तो होते ही हैं साथ में अध्यापन ,सिविल सेवा आदि विभिन्न सरकारी क्षेत्रों में भी चयनित होकर अपनी सेवा प्रदान करने योग्य हो जाते हैं ।

Annual and Semester	Name of Question paper	Two-Three Lines Descreption
Shastri 1st Semester	Sahitya C-1	इस प्रश्नपत्र में आचार्य विश्वनाथ रचित साहित्यदर्पण का प्रथम एवं नवम परिच्छेद तथा आचार्य दण्डी का काव्यादर्श प्रथम परिच्छेद निर्धारित है, जिनके अध्ययन से छात्र काव्यस्वरूप, शब्दालंकार एवं काव्यमार्ग विभाग का विस्तृत ज्ञान प्राप्त करते हैं ।
Shastri 1st Semester	Sahitya C-2	इस प्रश्नपत्र में किरातार्जुनीयम् प्रथमसर्ग, गंगापुत्रावदानम् प्रथमसर्ग अथवा माघ रचित शिशुपालवधमहाकाव्य का प्रथम एवं द्वितीयसर्ग निर्धारित हैं। जो सांकृतिक राजनैतिक ज्ञान से ओतप्रोत हैं। इनके अध्ययन से छात्रों में भाषा का परिष्कार एवं शब्दकोश का ज्ञान पुष्ट होता है।
Shastri 1st Semester	SLCC-1,5th paper	इस प्रश्नपत्र में संस्कृतभाषाकौशल निर्धारित है जिसके अन्तर्गत कथा कहानी अनुवाद एवं संस्कृत व्याकरण के माध्यम से संस्कृत के भाषण व लेखन में छात्र छात्राओं को दक्ष बनाया जाता है ।
Shastri 2nd Semester	Sahitya C-3	इस प्रश्नपत्र में आचार्य विश्वनाथ रचित साहित्यदर्पण का दशम परिच्छेद निर्धारित है जिनमें अर्थालंकारों का विस्तृत विवेचन है। इसके अध्ययन से छात्र काव्य एवं गीत आदि में अलंकारों को खोज सकते हैं तथा काव्य के रहस्य को सरलता से समझ सकते हैं ।
Shastri 2nd Semester	Sahitya C-4	इस प्रश्नपत्र में दशकुमारचरितम्(1–5उच्छ्वास तक) एवं भामहकृतकाव्यालंकार का प्रथम परिच्छेद निर्धारित है,:जिनमें क्रमशः प्रौढ गद्यशैली में दश कुमारों का चरित्र एवं काव्यशास्त्रीय सिद्धान्तों का विशद विवेचन करने में छात्र समर्थ हो जाते हैं ।
Shastri 3rd Semester	Sahitya C-5	इस प्रश्नपत्र में आचार्य विश्वनाथ रचित साहित्यदर्पण का षष्ठ परिच्छेद निर्धारित है जिसके अध्ययन से छात्र दृश्यकाव्य का विस्तृत ज्ञान प्राप्त करते हैं ।
Shastri 3rd Semester	Sahitya C-6	इस प्रश्नपत्र में महाकवि कालिदास रचित सुप्रसिद्ध मेघदूत खण्डकाव्य निर्धारित है ,जिसके अध्ययन से छात्र यक्ष यक्षिणी की विरह वेदना का रसास्वादन करते हुए विविध उपदेशों से लाभान्वित होते हैं ।
Shastri 3rd Semester	Sahitya C-7	इस प्रश्नपत्र में महाकवि श्रीहर्ष रचित सुप्रसिद्ध नैषधीयचरितमहाकाव्य का प्रथम एवं तृतीय सर्ग निर्धारित है जिनमें नल और दमयन्ती का प्रेम प्रसंग प्रौढ शैली में निबद्ध है जो भाषाज्ञान व विविधशास्त्रीय ज्ञान की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है ।
Shastri 4th Semester	Sahitya C-8	इस प्रश्नपत्र में आचार्य विश्वनाथ रचित साहित्यदर्पण का सप्तम एवम् अष्टम परिच्छेद निर्धारित है जिसके अन्तर्गत काव्यदोष एवं काव्यगुणों का विस्तृत विवेचन करने में छात्र सक्षम होते हैं ।
Shastri 4th Semester	Sahitya C-9	इस प्रश्नपत्र में माघरचित शिशुपालवधमहाकाव्य का प्रथम एवं द्वितीयसर्ग निर्धारित हैं। जो सांकृतिक राजनैतिक ज्ञान से ओतप्रोत हैं। इनके अध्ययन से भाषा का भी परिष्कार एवं शब्दकोश का ज्ञान पुष्ट होता है।
Shastri 4th Semester	Sahitya C-10	इस प्रश्नपत्र में आचार्य वामन रचित काव्यालंकारसूत्र के प्रथम द्वितीय एवम् तृतीय अधिकरण निर्धारित हैं, जिनके अध्ययन से छात्र काव्यप्रयोजन, काव्यदोष एवं काव्यगुणों का विशिष्ट ज्ञान प्राप्त करते हैं।
Shastri 3rd Year annual	1st paper	इस प्रश्नपत्र में आचार्य विश्वनाथ रचित साहित्यदर्पण का सप्तम ,अष्टम नवम एवं दशम परिच्छेद निर्धारित हैं , जिनके अध्ययन से छात्र काव्यदोष, काव्यगुण,शब्दालंकार एवम् अर्थालंकार के ज्ञान से लाभान्वित होते हैं ।
Shastri 3rd Year annual	2nd paper	इस प्रश्नपत्र में महाकवि भवभूति रचित सुप्रसिद्ध उत्तररामचरितनाटक निर्धारित है जहॉ राम एवं सीता की विरह वेदना आदि का कारुण्यपूर्ण प्रसंग सरसशैली में वर्णित है ।

Shastri 3rd Year annual	3rd paper	इस प्रश्नपत्र में महाकवि श्रीहर्ष रचित सुप्रसिद्ध नैषधीयचरितमहाकाव्य का त्रयोदश सर्ग एव नाट्यशास्त्र का षष्ठ अध्याय निर्धारित है जिनमें क्रमशः पंचनली वर्णन प्रसंग एवं रससिद्धान्त वर्णित है ।
Shastri 3rd Year annual	4th paper	इस प्रश्नपत्र में आचार्य वामन रचित काव्यालंकारसूत्र के प्रथम, द्वितीय अधिकरण तथा काव्यादर्श का प्रथम परिच्छेद निर्धारित है जिनमें क्रमशः काव्यस्वरूप, काव्यदोष एवं काव्यमार्ग विभाग का विस्तृत विवेचन है ।
Shastri 3rd Year annual	5th paper	इस प्रश्नपत्र में आचार्य अप्पयदीक्षित रचित कुवलयानन्द के 60 अलंकार निर्धारित हैं । जिसके अध्ययन से छात्र अलंकारों का प्रौढज्ञान प्राप्त करते हैं ।
Shastri 3rd Year annual	6th paper	इस प्रश्नपत्र में भट्टनारायण प्रणीत वेणीसंहार नाटक के पांच अंक निर्धारित है जिससे छात्र तत्कालीनसामाजिक व राजनैतिक ज्ञान प्राप्तकर लाभान्वित होते हैं ।
Acharya 1st Semester	1st paper	इस प्रश्नपत्र में आचार्य मम्मट प्रणीत काव्यप्रकाश के 1–4 उल्लास निर्धारित हैं, जिससे छात्र काव्यस्वरूप ,शब्दशक्ति, आर्थीव्यंजना तथा ध्वनि का विस्तृत ज्ञान प्राप्त कर लाभान्वित होते हैं ।
Acharya 1st Semester	2nd paper	इस प्रश्नपत्र में आचार्य पण्डितराज जगन्नाथ प्रणीत रसगंगाधर प्रथम आनन निर्धारित है जिससे छात्र काव्यशास्त्रीय सिद्धान्तों से अवगत होते हैं।
Acharya 1st Semester	3rd paper	इस प्रश्नपत्र में आचार्य आनन्दवर्धन रचित ध्वन्यालोक के प्रथम एवं द्वितीय उद्योत निर्धारित हैं, जिसमें काव्यात्मभूत ध्वनि का विस्तृत निरूपण किया गया है। जिसके अध्ययन से छात्र काव्य में विद्यमान विविध व्यंग्यों को समझने में सक्षम होते हैं ।
Acharya 1st Semester	4th paper	इस प्रश्नपत्र में कवि विशाखदत्त प्रणीत मुद्राराक्षस नाटक निर्धारित है, जो राजनैतिक सांस्कृतिक एवं सामाजिकादि विविध प्रकार की शिक्षा देता है ।
Acharya 1st Semester	5th paper	इस प्रश्नपत्र में वैदिक वाघ्मय का इतिहास निर्धारित है,जो सम्पूर्ण वेद वेदांग उपनिषद् आदि के सामान्य परिचयात्मक ज्ञान की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है ।
Acharya 2nd Semester	1st paper	इस प्रश्नपत्र में आचार्य मम्मट प्रणीत काव्यप्रकाश के 5,6,7 एवम् अष्टम उल्लास निर्धारित हैं जिसके अध्ययन से छात्र गुणीभूतव्यंग्य ,व्यंजनासिद्धि,काव्यदोष तथा काव्यगुणों के विशिष्ट ज्ञान से लाभन्तित होते हैं ।
Acharya 2nd Semester	2nd paper	इस प्रश्नपत्र में राजशेखर प्रणीत काव्यमीमांसा के प्रारम्भिक 5 अध्याय निर्धारित हैं ,जिसके अध्ययन से छात्र काव्य तत्त्वों का सामान्य ज्ञान प्राप्त करने में सक्षम हो जाते हैं ।
Acharya 2nd Semester	3rd paper	इस प्रश्नपत्र में आचार्य कुन्तक प्रणीत वक्रोक्तिजीवितम् के प्रारम्भिक 2 परिच्छेद निर्धारित हैं ,जिनमें वक्रोक्ति स्वरूप एवं वक्रोक्ति प्रकारों का विवेचन किया गया है।
Acharya 2nd Semester	4th paper	इस प्रश्नपत्र में महाकवि त्रिविक्रमभट्ट रचित नलचम्पू काव्य का प्रथम उच्छ्वास निर्धारित है , जिसके अध्ययन से छात्र सरस एवे श्लिष्ट भाषा का ज्ञान प्राप्त करते हैं
Acharya 2nd Semester	5th paper	इस प्रश्नपत्र में भारतीयदर्शनशास्त्र का इतिहास निर्धारित है,जिसके अध्ययन से सांख्य,योग, न्याय और वैशेषिक दर्शनों का सामान्य परिचय प्राप्त होता है।
Acharya 3rd Semester	1st paper	इस प्रश्नपत्र में आचार्य मम्मट प्रणीत काव्यप्रकाश के नवम एवं दशम उल्लास निर्धारित हैं, जिसमें शब्दालंकार और अर्थालंकार का विस्तृत विवेचन है ।
Acharya 3rd Semester	2nd paper	इस प्रश्नपत्र में महाकवि अश्वघोष रचित सुप्रसिद्ध बुद्धचरितमहाकाव्य के प्रारम्भिक पांच सर्ग निर्धारित हैं जिनमें गौतमबुद्ध का जीवन चरित प्रौढ एवम् आकर्षकशैली में निबद्ध है जिसके विशिष्टज्ञान से छात्र लाभान्वित होते हैं ।
Acharya 3rd Semester	3rd paper	इस प्रश्नपत्र में भारतीयकाव्यशास्त्र निर्धारित हैं, जिसके अन्तर्गत रसादिसम्प्रदायों के विशिष्ट ज्ञान से छात्र लाभान्वित होते हैं ।
Acharya 3rd Semester	4th paper	इस प्रश्नपत्र में महाकवि बाणभट्ट रचित हर्षचरित आख्यायिकाग्रन्थ के प्रारम्भिक पांच उच्छ्वासनिर्धारित हैं जिसके अन्तर्गत हर्षवर्धन के जीवन चरित सम्बन्धी विशिष्ट ज्ञान से छात्र लाभान्वित होते हैं । इस प्रश्न पत्र में लघुशोधप्रबन्ध भी वैकल्पिकरूप में है जो छात्रों में अनुसन्धान दृष्टि को उन्मीलित करता है, लघुशोधप्रबन्ध निर्माण के लिए शोधप्रविधि और पाण्डुलिपिविज्ञान भी पाठ्यक्रम में निर्धारित है।
Acharya 3rd Semester	5th paper	इस प्रश्नपत्र में क्षेमेन्द्रप्रणीत औचित्यविचारचर्चा ग्रन्थ निर्धारित हैं, जिसके अन्तर्गत छात्र औचित्य सिद्धान्तविषयक ज्ञान से लाभान्वित होते हैं ।
Acharya 4th Semester	1st paper	इस प्रश्नपत्र में आचार्यआनन्दवर्धन प्रणीत ध्वन्यालोक ग्रन्थ के तृतीय व चतुर्थ उद्योत निर्धारित हैं जिसके अन्तर्गत छात्र औचित्य सिद्धान्तविषयक ज्ञान से लाभान्वित होते हैं ।

Acharya 4th Semester	2nd paper	इस प्रश्नपत्र में कुमारदास प्रणीत जानकीहरण महाकाव्य के प्रथम एवं द्वितीय सर्ग निर्धारित हैं, जिसके अन्तर्गत छात्र सामाजिक राजनैतिक आदि विशिष्ट ज्ञान से लाभान्वित होते हैं ।
Acharya 4th Semester	3rd paper	इस प्रश्नपत्र में आचार्य कुन्तक रचित वक्रोक्ति जीवित 3–4 परिच्छेद व आचार्य धनिकधनंजय प्रणीत दशरूपक के 3–4प्रकाश निर्धारित हैं ,जिनके अध्ययन से छात्र क्रमशः वक्राक्ति एवं नाटकादि दश रूपकों का सांगोपांग विवेचन करने में सक्षम होते हैं।
Acharya 4th Semester	4th paper	भवभूति कृत मालतीमाधव नाटक1–5उच्छ्वास का यह प्रश्नपत्र छात्रों में तत्कालीनसमाज की समझ प्रदान करने से उपयोगी सिद्ध होता है ।
Acharya 4th Semester	5th paper	इस प्रश्नपत्र में लघुशोधप्रबन्ध अथवा वाक्परीक्षा निर्धारित है जो क्रमशः छात्रों में अनुसन्धान करने व तत्काल उत्तर देने की क्षमता प्रदान करते हैं।
Certificate course Sanskrit	1st paper	इस प्रश्नपत्र में संस्कृत अनुवाद सन्धि समास कारक आदि निर्धारित है जिसके अध्ययन से छात्र संस्कृत भाषा को लिखने व बोलने में कौशल प्राप्त करते हैं ।
Certificate course Sanskrit	2nd paper	इस प्रश्नपत्र में श्रीमद्भागवतगीता निर्धारित है जिसके अध्ययन से छात्र शुद्ध संस्कृतश्लोकों का उच्चारण , अन्वय ,व्युत्पत्ति, विग्रह के साथ अर्थ करने में सक्षम होते हैं ।